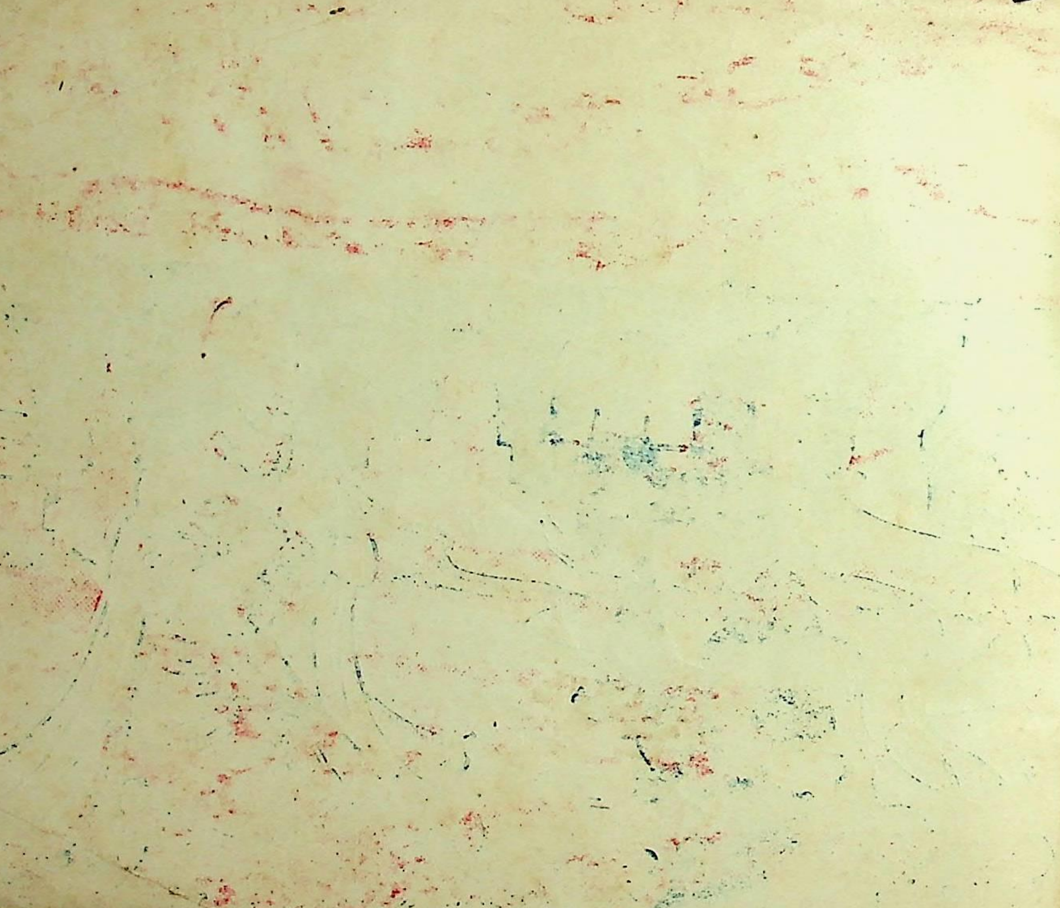
लोक परलोक सुधारने वाली अद्वितीय पुस्तक

भक्ति सागर

७२ रत्न युक्त





(१) आरती श्री गीता जी की

य गीता माता श्रीजय गीता माता। सुख करनी दुख हरनी तुमको जगमाता।
ज्ञान मोह ममता को छिन में नाश करे, सत्य ज्ञान का मन में तू प्रकाश करे।
जय०। शरण तेरी जो आवे तेरी मति ग्रहण करे, पाप ताप मिट जावें निर्भयभव-
सिन्धु तरे। जय०। रणक्षेत्र में अर्जुन जब शोकाधीर हुआ, कर्तव्य कर्म तज
ठा बहुत मलीन हुआ। जय०। तब श्री कृष्णचन्द्र के मुखसे तुमने अवतार
लिया तत्व बात समझकर उसका उद्धार किया। जय०। शरीर जन्मते मरते
आत्मा अविनाशी, शरीर को दुख व्यापे आत्मा सुखराशी। जय०। अतः
शरीर की ममता मन से त्याग करो, आत्मा ब्रह्म को चीन्हो उससे अनुराग
करो। जय०। जग में ब्रह्म को जानो सबसे प्रीत करो, वैर-भाव ममता वश
होकर न अनरीत करो। जय०। निष्काम कर्म नित्य करके जग का उपकार
करो, फल वाँछा को त्यागो सद्व्यवहार करो। जय०। मनको वश में करके इच्छा
त्याग करो, निष्काम जगत में रह कर हरि से अनुराग करो। जय०। यह उपदेश
जो तेरे नर मन में लावे, भगवान् भवसागर से वह क्यों न तर जावे। जय०।

(२) प्रातःकाल पढ़ने के वाते नाग लीला

श्रीकूल यमुना धेनु आगे, जल में बैठे प्रभु जी आन के। नाग नागनी दोनों बैठे, श्री कृष्ण जी पहुँचे आन के। नागनी कहती सुनों रे बालक, जाओ यहाँ से भाग के। तेरी सूरत देख मन दया उपजी, नाग मारेगा जाग के। किसका बालक पुत्र कहिए, कौन तुमारो गाम है। किसके घर तू जन-मिया रे बालक क्या तुमारो नाम है। वासुदेव जी का पुत्र कहिए, गोकुल हमारा गांम है। श्री मात देवकी जनमियो मैंनू, श्री कृष्ण हमारा नाम है। लै रे बालक हत्थां दे कंगन कन्ना दे कुण्डल सवा लाख की बोरियां। इतना द्रव्य लैजा रे बालक दियां नागा कोलो चोरियां। क्या करां तेरे हाथों के कंगन, कोनों के कुण्ल, सवा लाख की बोरियां। श्री मात यशोदा दही बिलोवे, पावाँ तेरे नाग काले दियां डोरियां। क्या रे बालक वैद ब्राह्मण, क्या मारिया तू तां चाहुना एं। नाग दल में आन पहुँचिया, अब कैसे घर जावना एं। ना रे पद्मनी ब्रह्मण, नंद जी का मैं बालक। श्री मात यशोदा दही

बिलोवे, नेत्रा मांगे काले नाग का। कर चूमे भुजा मरोड़ी, नागन नाग जगाया। उठो उठो रे बलवन्त जोद्धा, बालक नथने को आया। उठो २ रे मण्डली के राजा, इन्द्र बागूं मर जाया। बांका मुकट पर झपट कीनी, श्रीकृष्ण जी मुकट बचाया। भुजा का बल स्वामी खैंच लियो जीभ का बल जो प्रभु रहन दिया। हाथ काली नाग नाथियो, फन फन निरत कराया। फूल फूल मथुरा की नगरी देवकी मंगल गाया। भगत हेतु प्रभु जन्म लेकर लङ्का में रावण मारिया। काली प्रहलाद नाग नाथिया, मथुरा में कंस पछारिया। सप्त द्वीव नौ खण्ड चौदह, सभी तेरा है पसारिया। सूरदास प्रभु जी तेरा यश गावे, तेरे चरणा तो बलिहारिया।

(३) आरती निर्गुण ब्रह्म

ओंजय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे भक्त जनोंके सकंट क्षण में दूर करे जो ध्यावे फल पावे दुखविनशे मनका। सुख सम्पति घर आवे कष्ट मिटे तनका।

मात पिता तुम मेरे शरण गहूँ किसकी । तुम बिन और न दूजा आस करूँ जिसकी तुम पूरण परमात्मा तुम अन्तर्यामी । पार ब्रह्म परमेश्वर तुम सबके स्वामी । तुम करुणा के सागर तुम पालनकर्ता, मैं मूरख खल कामी कृपा करो भर्ता । तुम हो एक अगोचर सबके प्राण पति, किस विध मिलूँ गोसांई तुम को मैं कुमति दीनबन्धु दुःखहर्ता ठाकुर तुम मेरे, अपने हाथ उठाओ द्वार पड़ा तेरे । विषय विकार मिटाओ पाप हरो देवा, श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ सन्तन की सेवा । ओं जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे । भक्त जनों के संकट क्षण में दूरकरे

४ आरती गंगा जी की

ओं जय जय जय गंगे श्री जय जय जय गंगे । त्रिलोकी के तारण कारन कष्ट निवारण भक्त उद्धारण आई गंगे । आश्चर्य महिमा वेद सुनावें नरमुनि ज्ञानी ध्यान लगावें, तेरा गंगे । जो तेरी शरणागति आवे जीवन के मुक्ति का इच्छित फल पावे, श्री गंगे । पाप हरण मुक्ति की दाता काटे दर्शन यम की

त्रासा हर गंगे। लाल आरती जो नित गावें, बसि बैकुण्ठ परमपद पावें ॥ हरगंगे

॥ इति श्री गंगा जी की आरती सम्पूर्ण ॥

(५) आरती श्री गंगा जी की दूसरी

जो जन गङ्गा गंगा कहै। जन्म २ के कोटि २ पाप सब क्षण ही मांहि दहै। करत स्नान सो वांछित फल तत्क्षण तुरत लहै॥ अरु कुल पदम निवासिनी जय जय सेवक बाँह गहै। जग जीवनि जगदम्बा जो को हरिहर ध्यान धरैं॥ देवन अरज करन नित ध्यावत मूढ़ को त्राण चहै। ब्रजपति को प्यारी संगम ते बहु सुख देन चहै॥

(६) आरती गंगा जी की तीसरी

ओम् जय गंगे माता, श्री जय गंगे माता, जो नर तुमको ध्याता मन वाँछित फल पाता ओ३म् जय गंगे माता ॥ १ ॥ चन्द्र सी ज्योति तुम्हारी जय निर्मल आता, शरण पड़े जो तेरी, सो नरतर जाता। ओ३म् जय गंगे माता ॥ २ ॥ पुत्र सगर के तारे सब जग के ज्ञाता,

कृपा दृष्टि तुम्हारी त्रिभुवन सुख दाता । ओ३म् जय गंगे माता ॥३॥ एक हो बार जो तेरी शरणगति आता यम की त्रास मिटाकर, परमगति पाता । ओ३म् जय गंगे माता ॥४॥ आरती मात तुम्हारी जो जन मन गाता, दास वही सहज में मुक्ति को पाता । औ३म् जय गंगे माता ॥५॥

॥ इति श्री गङ्गा जी की आरती सम्पूर्ण ॥

(७) आरती शिव जी की

शीश भंगअर्धाङ्ग पारवती सदा विराजत कैलाशी । नन्दी भृङ्गी नृत्य करत हैं गुन भक्ति शिव की दासी ॥१॥ शीतल मन्द सुगन्ध पवन बहै बैठे हैं शिव अविनाशी । करत गान गन्धर्व सप्तसुर राग रागनी सब गासी ॥२॥ यक्ष भैरवी जहाँ डोलत बोलत हैं जह बनवासी । कोयल शब्द सुनावत सुन्दर भ्रमर करते हैं गुंजासी ॥३॥ कल्पवृक्ष अरु पारिजात लाग रहे हैं लक्षासी । सूर्यकान्ती सम पर्वत शोभित चन्द्र भावना वासी । छहों ऋतु नित फलत फूलत हैं पुष्प

चढ़त हैं वर्षासी ॥४॥ देवमुनि जनकी भीड़ पड़तहै निगम रहत जो नित गासी ब्रह्मा विष्णु जाको ध्यान धरत हैं कछु शिव हमको फरमाशी ॥५॥ ऋद्धि सिद्धि के दाता शंकर सदा आनन्दित सुखदासी । जिनके जिनके सुमिरण सेवा करै टूट जाय यम की फाँसी ॥६॥ त्रिशूलधर को ध्यान निरन्तर मन लगाय कर जो ध्यासी । दूर करे विपता शिव मनकी जन्म२ शिवपद पासी ॥७॥ कैलाश काशीके वासी अविनासी सुधि लीज्यो सेवक जान सदा चरणन को अपनो जान दरश दीज्यो ॥८॥ तुमतो प्रभु जी सदा सयाने औगुन मेरे सब ढकियो । सब अपराध क्षमाकर शङ्कर किंकर की विनती सुनियो ॥९॥

८ आरती श्री दुर्गा जी की

जय अम्बे गौरी मैया जय मंगल मूर्ति मैया, जय आनन्द करणी तुमको निशदिन ध्यावत हर ब्रह्मा शिवरी ॥टेक॥ माँग सिन्दूर विराजित टीका मृगमद को । उज्जल से दोउ नयना चन्द्र बदन नीको ॥ कनक समान कलेवर रक्तांबर राजै रक्त पुष्प गल माला कण्ठन पर साजै । केहरि पाहन राजत खड्ग खप्परधारी

सुर नर मुनिजन सेवत तिनके दुःख हारी ॥ कानन कुण्डल शोभित नासाग्रे मोती । कोटक चन्द्र दिवाकर सम राजत ज्योति ॥ शुम्भ विडारे महिषासुर घाती। धूम्र विलोचन नयना निशिदिन मदमाती । चौंसठ योगनि गावत नृत्य करत भैरू। बाजत तालमृंदगा और बाजत डमरू । भुजाचार अति सोभित खड्ग खप्परधारी। मनवांछित फल पावत सेवत नर नारी ॥ कंचन थाल विराजत कोटि रत्न ज्योति । श्री मालकेत में राजत कोटि रत्न ज्योति ॥ अम्बे जी की आरती, ज कोई नर गावे । कहत शिवानन्द स्वामी सुखसम्पति पावे ॥

(९) आरती सत्यनारायण जी की

जय लक्ष्मी रमणा श्री जय लक्ष्मी रमणा । सत्य नारायण स्वामी जन पातक हमणा ॥ रत्न जटित सिंहासन अद्भुत छवि राजे । नारद करत गान निरन्तर घण्टा ध्वनि बाजे ॥ प्रकट भये कलि कारण द्विज को दरश दयो । बूढ़ो ब्राह्मण बन के कंचन महल कियो दुर्बल भील कराल

जिन पर कृपा करी। चन्द्रचूड़ एक राजा तिनकी विपत हरी॥ वश्य मनोरथ पायो श्रद्धा तज दीनी। सो फल भोग्यो प्रभु जी फेर स्तुति कीनी॥ भाव भक्ति के कारण छिन छिन रूप धरयो। श्रद्धा धारण कीनी जिनको काज सरयो॥ ग्वाल संग राजा वन में भक्ति करी। मन वांछित फल दीनों दीन दयाल हरी॥ चढ़त प्रशाद सवायो कदली फल मेवा। धूप दीप तुलसी से राजी सत्य देवा॥ श्री सत्य नारायण जी की आरती जो कोई गावे। भनत दास सुख सम्पति मन वांछित फल पावे॥

(१०) श्री बजरङ्गबली की आरती

आरती कीजे हनुमान लला की, दुष्ट दलन रघुनाथ कला की॥ लंका जाके बल से गिरवर कांपे, रोग दोष कछु निकट नहिं झाँके। अंजनी पुत्र महा बलदाई, सन्तन के प्रभु सदा सहाई। दे बीड़ा रघुनाथ पठाये, लंका जारि सिया सुधि लाये। लंका कोट समुद्र सी खाई। जात पवन सुत बार न लाई। लंका जलाय असुर सब मारे, रामचन्द्र के काज सवारे। लक्ष्मण

मूर्छित पड़े धरती पे, लाय सँजीवन प्राण उबारे। पैठ पाताल छोड़ यम कातुर अहिरावण के भुजा उखारे। बाँयें भुजा सब असुर सँहारे, दाहिने सब सन्त उबारे ॥ सुरनर मुनिजन आरती उतारें, जय जय जय हनुमान उचारें ॥ कंचन थाल कपूर की बाती, आरती करत अंजनी माई। जो हनुमान जी की आरती गावे, बसै बैकुण्ठ अमर पद पावे। लंक विध्वंस किए रघुराई, तुलसीदास स्वामी की आरती गाई ॥ जय० ॥

११ द्रोपदी विनय

बिन काज आज महाराज लाज गई मेरी। दुख हरो द्वारिकानाथ शरण मैं तेरी ॥ टेक ॥ दुःशासन वंश कठोर महा दुःख दाई। कर पकड़त मेरो चीर लाज नहीं आई ॥ अब भया धर्म का नाश पाप रहा छाई। लखि अधम सभा की ओर नार बिलखाई ॥ शकुनी, दुर्योधन, कर्ण खड़े सब घेरी। दुःख हरा द्वारिकानाथ शरण मैं तेरी ॥ १ ॥ तुम सन्तन को सुख

देत देवकीनन्दन। है महिमा अगत अपार भक्त उर नन्दन ॥ किया सिया दुःख दूर शम्भु धन खरान। ए तारण मदन गोपाल मुनिन मन भजन ॥ करुणानिधान भगवान् करी क्यों देरी। दुःख हरो द्वारिकानाथ शरण मैं तेरी ॥२॥ बैठे जहाँ राज समाज नीति सब खोई नहिं कहत धर्म की बात्त सभा में कोई ॥ पाँचों पति बैठे मौन कौन गति होई। लै न्द नन्दन को नाम द्रोपदी रोई ॥ कर कर विलाप सन्ताप सभा में टेरीं। दुःख हरो द्वारकानाथ शरण मैं तेरी ॥३॥

(१२) रामनाम की महिमा

सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम
सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम
सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम
सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम

हरे राम हरे राम हरे राम हरे राम हरे राम हरे राम हरे राम हरे राम
हरे राम हरे राम हरे राम हरे राम हरे राम हरे राम हरे राम हरे राम
हरे राम हरे राम हरे राम हरे राम हरे राम हरे राम हरे राम हरे राम
हरे राम हरे राम हरे राम हरे राम हरे राम हरे राम हरे राम हरे राम
हरे कृष्ण हरे कृष्ण हरे कृष्ण हरे कृष्ण हरे कृष्ण हरे कृष्ण हरे कृष्ण
हरे कृष्ण हरे कृष्ण हरे कृष्ण हरे कृष्ण हरे कृष्ण हरे कृष्ण हरे कृष्ण
हरे कृष्ण हरे कृष्ण हरे कृष्ण हरे कृष्ण हरे कृष्ण हरे कृष्ण हरे कृष्ण

(१२) गजेन्द्र मोक्ष

नाथ कैसे गज को फंद छुड़ायो, यह अचरज मोहिं आयो ॥ टेक ॥ गज और ग्राह लड़त जल भीतर, लड़त लड़त गज हारयो, जौ भर सूंड रही जल ऊपर तब हरि नाम पुकारयो ॥नाथ०॥ शबरी के बेर, सुदामा के तन्दुल रुच-रुच भोगलगायो, दुर्योधन की मेवा त्यागी साग विदुर घर खायो ॥नाथ॥ बैठ पाताल काली नाग नाथ्यो फण पर नृत्य करायो, गिरि गोवर्धन कर पर धारयो नंद

कालालकहायो ॥ नाथ ॥ अघासुर मारयो बकासुर मरयो दावानल पान करायो खम्ब फाड़ हरिणाकुश मारयो नरसिंह नाम धरायो ॥ नाथ ॥ अजामिल गज गणिका तारी द्रोपदी का चीर बढ़ायो । पय पान करत पूतना मारी कुब्जका रूप बनायो ॥ नाथ ॥ कौरव पाण्डव को युद्ध रचायो कौरव मार हटायो । दुर्योधन का मान घटायो मोहि भरोसा आयो ॥ नाथ ॥ सब सखियां मिलबन्धन बांधियो रेशम गाँठ बन्धायो । छूटे नाहिं राधाजी का कँगन कैसे गोवर्धन उठायो नाथ ॥ योगी जाको ध्यान धरत हैं ध्यान धरत नहीं आयो । सूर श्याम प्रभु तुम्हरे मिलन को यशुदा की धेनु चरायो ॥नाथ० ॥

(१४) श्रीरामचन्द्र स्तोत्र

श्री रामचन्द्र कृपालु भजुमन हरण भव भय दारुणम्, नव कंजलोचन कंज मुख कर कंजपद कञ्जारुणम । कंदर्प अगणित अमित छवि नवनील नीरज सुन्दरम् । पट पीत मानहुँ तड़ित रुचिशुचि नौमि जनक सुतावरण । भज दीन-बन्धु दिनेश दानव दुष्ट वंश निकन्दनम्, रघुनन्द आनन्दकन्द कोशल चन्द्र

दशरथ नंदनम् । सिर कीटकुराडल तिलक चारु उदारु अँगविभूषणम् ।आजानु भुज शर चाप धर संग्राम जित खरदूषणम् । इति वदति तुलसी दास शंकरशेष सुनिमन रन्जनम् । मम हृदय कन्ज निवास कर कामादि खलदल गंजनम् । मन जाहि राचो मिलहि सो वर सहज सुन्दर साँवरो, करुणा निधान सुजान शील सनेह जानत रावरो । यह भाँति गौ आसीस सुन सिय सहित हिय हर्षित अली, तुलसी भवानिहिं पूजि पुनि २ मुदित मन मन्दिर चली ॥ सियावर रामचन्द्र की जय ॥

(१५) श्री कमल नेत्र स्तोत्र

श्री कमलनेत्र कटिपीताम्बर अधर मुरली गिरधरम् । मुकुट कुराडल करल कुटिया सांवरे राधे वरम् ॥१॥ कूल यमुनाधेनु आगे सकल गोपियों के मन हरम् पीत वस्त्र गरुड़ वाहन चरण सुख नित सागरम् ॥ करत केलि कलोल निशदिन कुञ्जभवन उज्जागरम् अचल अमर अडोलनिश्चल पुरुषोत्तम

अपरा परम् ॥३॥ दीनानाथ दयाल गिरधर कन्स हिरनाकुश हरम् । गल फूलमाला विशाल लोचन अधिक सुन्दर केशवरम् ॥ ४ ॥ बंसीधर वसुदेव छल्या बलि छल्यो हरिवामनम् । जल डूबते गज राख लीनो लंकाछेद्यो रावणम् सप्तद्वीप नवखण्ड चौदह भवन कीनो एक पलम् ॥५॥ द्रोपदी जी की लाज राखी कहां लौं उपमाकरम् । दीनानाथ दयालु पूरण करुणामय करुणा करुणम् ॥६॥ कविदत्तदास विलास निशिदिन नाम जपनितनागरम् । प्रथम गुरुजी के चरण वंदो यस्य ज्ञान प्रकाशितम् ॥७॥ विष्णु जुगादि ब्रह्मा सेवते शिवशङ्करम् श्री कृष्ण केशव कृष्ण केशव कृष्ण यदुपति केशवम् ॥८॥ श्री राम रघुवर रम रघुवर राम रघुवर राघवम् । मच्छ कच्छ वराह नरसिंह पाहि रघुपति पावनम् ॥९॥ मथुरा में केशवराय विराजे गोकुल बाल मुकन्द जी श्री बृन्दावन में मदन मोहन गोपीनाथ गोविन्दजी ॥१०॥ धन्य मथुरा धन्य गोकुल जहाँ श्रीपति अवतरे । धन्य जमुना का नीर निर्मल ग्वाल बाल सखावरे ॥११॥

नवनीत नागर करत निरतत शिव विरँचि मन मोहितम् । कालिन्दी तट करत क्रीड़ा बाल अद्‌भुत सुन्दरम् ॥१२॥ ग्वालबालसब सखा विराजे संग राधे भामिनी । वंशीवट तट निकट यमुना मुरली की टेर सुहावनी ॥१३॥ भज राधे रघुवंश उत्तम परम राजकुमार जी सीता के पति भगवत जानत जगत प्राण अधार जी ॥१४॥ जनक राजा प्राण राखो धनुष बाण चढ़ावहु । सती सीता नाम जाके श्री रामचन्द्र वर पावहीं ॥१५॥ धन्य मथुरा खेल गोकुल नन्दन के हरि नन्दनम् । बाल लीला पतित पावन देव की बासुदेवकम् ॥१६॥ श्री कृष्ण कलिमल हरण जाके जो भजे हरि चरण को । भक्ति अपनी देह माधव भवसागर के तरण को ॥१७॥ जगन्नाथ जगदीश स्वामी श्री बद्रीनाथ विश्वम्भरम् द्वारका के नाथ श्री पति केशवं प्रणदाम्हं ॥१८॥ श्री कृष्ण अष्टपद पढ़त निशिदिन विष्णु लोक सगच्छित श्री गुरु रामानन्द अवतार स्वामी कविदत्त दास समाप्तम् ।

॥ इति श्री कमल नेत्र स्तोत्र समाप्त ॥

(१६) हनुमान चालीसा

दोहा—श्री गुरु चरण सरोज रज, निज मन मुकर सुधार। वरणौं रघुवर विमल यश, जो दायक फल चार॥ बुद्धिहीन तनु जानके, सुमरौ पवन कुमार। बल बुद्धि विद्या देहु मोहि करहु कलेश विकार॥

॥ चौपाई ॥

जय हनुमान ज्ञानगुण सागर, जय कपीश तिहुँलोक उजागर। रामदूत अतुलित बलधामा, अञ्जनि पुत्र पवन सुत नामा। महावीर विक्रम बजरंगी, कुमति निवार सुमति के सङ्गी। कञ्चन वरण विराज सुवेशा, कानन कुण्डल कुञ्चित केशा। हाथ वज्र अरु ध्वजा विराजै, कांधे मूँज जनेऊ साजै। शंकर सुवन केसरी नन्दन, तेज प्रताप महाजग वन्दन। विद्यावान् गुणी अति चातुर, राम काज करिबे को आतुर। प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया, राम लखन सीता मन बसिया। सूक्ष्म रूप धरि सियहि दिखावा, विकट रूप धरि लंक जरावा। भीम रूप धरि असुर संहारे, रामचन्द्र के काज

संवारे । लाय सञ्जीवन लषण जिवाये, श्री रघुवीर हरषि उर लाये । रघुपति कीनी बहुत बड़ाई, तुम मम प्रिय भरत सम भाई । सहस बदन तुम्हरो यश गावें, अस कहि श्रीपति कण्ठ लगावें । सनकादि ब्रह्मादि मुनीशा, नारद शारद सहित अहीशा । यम कुबेर दिग्पाल जहाँते, कवि कोविद कहि सके कहाँते । तुम उपकार सुग्रीवहि कीन्हा, राम मिलाय राजपद दीन्हा । तुम्हरो मंत्र विभीषण माना, लंकेश्वर भये सब जग जाना । युग सहस्र योजन जो भानू, लील्यो ताहि मधुर फल जानू । प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं, जलधि लाँघ गये अचरज नाहीं । दुर्गम काज जगत के जेते, सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते । रामदुवारे तुम रखवारे, होत न आज्ञा बिन पैसारे । सब सुख लहै तुम्हारी शरणा, तुम रक्षक काहू को डर ना । आपन तेज सम्हारो आपै, तीनों लोक हांकते कांपै । भूत पिशाच निकट नहिं आवै, महावीर जब नाम सुनावै । नाशै रोग हरे सब पीरा, जपत निरन्तर हनुमत वीरा । संकट से हनुमान छुड़ावै, मन क्रम वचन ध्यान जो लावै । सब पर राम तपस्वी राजा

तिनके काज सकल तुम साजा । और मनोरथ जो कोई लावे, तासु अमित जीवन फल पावे । चारों युग प्रताप तुम्हारा, है प्रसिद्ध जगत उजियारा । साधु संत के तुम रखवारे, असुर निकन्दन राम दुलारे । अष्टसिद्धि नव निधि के दाता, अस वर दीन्ह जानकी माता । राम रसायन तुम्हरे पासा, सदा रहो रघुपति के दासा । तुम्हरे भजन राम को भावें, जन्म जन्म के दुख बिसरावें । अन्त काल रघुपति पुर जाई, जहाँ जन्म हरि भक्त कहाई । और देवता चित्त न धरई, हनुमत सेय सर्व सुख करई । संकट हरे मिटे सब पीरा, जो सुमिरे हनुमत बल बीरा । जय जय जय हनुमान गुसाईं, कृपा करो गुरु देव की नाईं । यह शत बार पाठ कर जोई, छूटै बन्दि महा सुख होई । जो यह पढ़े हनुमान चालीसा, होय सिद्ध साखी गौरीसा । तुलसी दास सदा हरि चेरा, कीजे नाथ हृदय महँ डेरा ।

दोहा—पवन तनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप ।

राम लषण सीता सहित, हृदय बसो सुर भूप ॥

(१७) संकट मोचन हनुमानाष्टक

मत्त गयंद छंद--बाल समय रवि भक्ष लियो, तब तीनहुँ लोक भयो अँधियारो। ताहि सो त्रास भयो जग को, यह संकट काहु सो जात न टारो। देवन आन करी विनती तब, छोड़ि दियो रवि कष्ट निवारो। को नहिं जानत है जग में, कपि संकट मोचन नाम तिहारो ॥ १ ॥ बालि कि त्रास कपीश बस, गिरि जात महा प्रभु पंथ निहारो। चौंकि महामुनि श्राप दियो तब चाहिये कौन विचार विचारो। के द्विज रूपले आप महाप्रभु, सोतुम दास के शोक निवारो ॥ को० २ ॥ अङ्गद के संग लेन गये, सिय खोज कपीश यह बैन उचारौ। जीवत ना बचिहौ हम सों जु, बिना सुधि लिये इहाँ पगु धारो। हारि थके तट सिन्धु सबै तब, लाय सिया सुधि प्राण उबारो ॥ को० ३ ॥ रावण त्रास दई सिय को तब, राक्षसि सों कहि शोक निवारो। ताहि समय हनुमान महा प्रभु, जाय महा रजनीचर मारो। मांगत सीय अशोक सों आगि सु, दै प्रभु मुद्रिका शोक निवारो ॥को० ४॥ बाण लग्यो उर लक्ष्मण के, तब प्राण तज्यो

सुत रावण मारो। लगह वैद्य सुखेन समेत, तब गिरि द्रोण सुबीर उपारो। लाय संजीवन हाथ दई, तब लक्ष्मण के तुम प्राण उबारो॥ को०५॥ रावण युद्ध अजान कियो, तब नाग की फांस सबै सिर डारो। श्री रघुनाथ समेत सबै दल, मोह भयो यह संकट भारो। आनि खगेश तबै हनुमान जु, बन्धन काटि सुत्रास निवारो॥ को० ६॥ बन्धु समेत जबै अहिरावण, लै रघुनाथ पताल सिधारो। देविहि पूजि भलो विधि सो, बलि देन सबै मिलि मंत्रविचारो। जाय सहाय भयो तबहीं, अहिरावण सैन्य समेत संहारो॥ को०७॥ काज कियो बड़ देवन के, तुम वीर महाप्रभु देखि विचारो। कौनसो संकट मोर गरीब को, जो तुमसो नहिं जात है टारो। बेगि हरो हनुमान महाप्रभु, जो कछु संकट होय हमारो॥ को० ८॥

दोहा—लाल देह लाली लसे, अरु धरि लाल लंगूर।
बज्रदेह दानव दलन, जय जय जय कपि शूर॥

(१८) हरिहर स्तोत्र

प्रथमे जो लीजे है गणपति का नाम। तो होवे सभी काम पूर्ण तमाम॥ करे विनती दास कर हरि का ध्यान। जो कृपा करी आप गिरधर हरी॥ हरिहर हरिहर हरिहर हरी, मेरी बार क्यों देर इतनी करी॥१॥ ब्रह्मा विष्णु शिवजी हैं एको स्वरूपा हुए एक से रूप तीनों अनूपा। चौबीस अवतारों की महिमाकरी॥ हरिहर॥ शांति स्वरूप और परमेश्वरी। रखा नाम अपना महाईश्वरी॥ योगीश्वर मुनीश्वर तपीश्वर ऋषि। तेरी लौ में लीन परमेश्वरी॥ हरी०॥ तेरा नाम है दुःखहरण दीनानाथ। जो बरसन लगा इन्द्र गुस्से के साथ॥ रखा तुमने ग्वालों का गिरवर के हाथ। रहा नाम अपना धरा गिरधारी॥ हरी०॥ असुर ने जा बांधा था प्रहलाद को। न छोड़ा भक्त ने तेरी याद को॥ न कीनी तवक्कफ़ खड़े दाद को। धरा रूप नरसिंह पीड़ा हरी॥ हरी०॥ नहीं छोड़ता राम का था जिकर। तो गुस्से में बांधा था उसको पिदर॥ कहा कि करूं मैं जुदा तन से सर। तो खम्भ फाड़ निकले न देरी करी॥ हरी०॥ चले जल्द

आये प्रहलाद की बेर। हिरणाकुश का मारा ना कीनी थी देर॥ किया रूप बावन ब्राह्मण का फेर। बली के जो द्वारे आ ठाड़े हरी॥ हरी०॥ था जलग्राह ने गज को घेरा जभी। जो लीना था उसने नाम तेरा कभी॥ जो मुश्किल बनी शरण आया तभी। हरि रूप को करके पीड़ा हरि॥हरी०॥ अजामिल को तारा न कीनी थी देर। चखे प्रेम से झूठे भिलनी के बेर॥ करी बहुत कृपा जो गणिका की बेर। अजामिल कहाँ कर सके हमसरी॥ हरी०॥ जभी भक्त पै आके विपता पड़ी। सुदामा की थी पल में पीड़ा हरी॥ जिसने तेरे नाम की धुन धरी। ना राखे तू मुश्किल किसी की अड़ी॥ हरि॥ नरसी भक्त एक हुण्डी करी। सांवलशाह ऊपर थी उसने लिखधरी॥ ढूँढ़त फिरे थे लगी थरथरी। सांवलशाह हो हुण्डी उसकी भरी॥ हरी०॥ वक्रदन्त ने जब सताई मही। न सूझी कछु बहुत आतुर भई। सिरफ ओट तेरी मही ने लई। किया रूप बाराह रच्छा करी॥ हरी०। जब सय्याद पक्षी का था दुख दिया। वह आतुर भया नाम तेरा लिया॥ तभी साँप

सय्याद को डस गया, छुड़ाया था पक्षी को जो हर हरी ॥ हरी० ॥ वह रावण असुर जब सिया ले गया । निकट मौत आई वो अन्धा भया ॥ असुर मार राजा विभीषण किया । सिया लेके आये अयोध्यापुरी ॥ हरी० ॥ जो गौतम अहिल्या को बददुआ दई । उसी दम अहिल्या शिला हो गई ॥ पड़ी थी वह राह में मुद्दत हुई । लगा चरण मुक्ति उसकी करी ॥ ॥ हरी० ॥ जो संकट बना एक नामे का आ । कहे बादशाह मेरी गौ दे जिवा ॥ नामे विनती नाथ आगे करी । वहां नाथ नामे की पीड़ा हरी ॥ हरी० ॥ शंखासुर असुर एक पैदा हुआ । ब्रह्मा के वो वेद सब ले गया । ब्रह्मा आपकी शरण आकर पड़ा । मत्स्यरूप हो वेद लाये हरी ॥ हरी० ॥ यमला और अर्जुन किया जो कुछ पाप । हुए जड़ जो उनको हुआ था सराप । उखल सेती आ नाथ पहुँचे जो आप । उखल साथ ही उनकी आपता हरी ॥ हरी० ॥ द्रोपदी के कौरव जुलम जोर साथ । उतारन लगे चीर पट अपने हाथ ॥ किया याद द्रोपदी ने तुझे दीना दाथ । रखी लाज

उसको नमन ना करी॥ हरी० ॥ वो है याद तुमको जो रुकमन की बार। खबर देने आया था जुन्नार दार ॥ चढ़े नाथ रथ पर हुए थे सवार। रुकम बांध रुकमन को लाये हरी ॥ हरी० ॥ असुर एक दर पै सतावन लगा। दशोंदिशा शिवों को फिरावन लगा ॥ धरन हाथ सिर शिव के रच्छा करी। शक्ति रूप हो शिव की रच्छा करी ॥ हरी० ॥ दुरवासा गया शिष्य ले पांडवों के पास। भोजन करने की जी की नी थी आस ॥ तब राजा ने करावन की इच्छा करी। वहां नाथ पांडवों का विपता हरी। हरी०। जो धन्ने भक्त मांग ठाकुर लिया। त्रिलोचन मिश्र हंस के बट्टा दिया। भक्त का दृढ निश्चय देखा हरी। भोजन किया धरती हुई थर थरी । हरी०। युधिष्ठिर पैं जब कोप कौरव हुआ। कि हर दो तरफ जंग आकर मचा। तभी खून का सिंधु बहने लगा। टटीरी के बच्चों की रच्छा करी।॥ हरी० ॥ तेरे अंत को कोई पावै कहाँ। माधोदास को जाड़ा लगा जहाँ ॥ छप्पर बाँधकर उसकी रच्छा करी। हरी०। गरुड़ की सवारी पै अब तक रहा । बड़ा ताज्जुब है हमको

भया । कड़ाहा गरम तेल का जब वह चढ़ा । सुधनवा को आकर बचाया हरी ॥ हरी० ॥ बड़ा राक्षसों का जुलम था जहाँ । ऋषिवर मुनिवर खराबी निशाँ । मारे दैत्य सब ऋषि हुए शादमां । बड़ी कृपा कर पीड़ा भगताँ हरी । हरी० । ध्रुव सुखन माता का गोश कर । चले घर से बाहर तेरी आस पर । लगे भजन करने तब इक पाँव पर । किया दास उसको गले ला हरी । हरी० । तनमी उमर कंस दुश्मन रहा । पलक में तो उसका उद्धारण किया । उग्रसेन को राज मथुरा का दिया । संदीपन का बेटा जिवाया हरी । हरी । लिखी बाप की उनकी चिट्ठी गई । नहीं एक पल ढील करनी पड़ी ॥ लिखा विष था जो उसकी विषया करी । लिखो कुछ थी ईश्वर ने कुछ चाकरी । हरी० । जो कुब्जा से सन्दल लिया मुरलीधर । लगे देखने लोग इधर और उधर । ताज्जुब रहे देख कुब्जा उपर । रख पाओं पर पाओं सीधी करी । हरी० । राजा ने पकड़ जहर कातिल दिया । जो पीये तब उसका ना छोड़े जिया मीरा ने तेरा नाम लेकर पिया । उसी विष से जा अमृत करी ॥ हरी ॥

थे अड़सठ के ऊपर चौबीस हजार । रखे बहुत राजा जरासिंध तार ॥ वहाँ वक्त तंगी जो कीनी पुकार । उसी वक्त उनकी जो विपदा हरी ॥ हरी० ॥ दीनानाथ जो नाम तेरा आया । यही नाम सुन दास शरणी पाया ॥ अपने नाम को लाज राखो हरी । मेरे दुख सभी काट राखो हरी ॥ हरी० ॥ तू हैगा आदर बलीराम का । राखूं भरोसा तेरे नाम का ॥ नहीं कोई दूजा तेरी शान का । तू ही जगत बीच करता हरी ॥ हरी० ॥ मेरी बिनती को सुनो लाल जी । यह गफलत का नहीं वक्त गोपाल जी ॥ करो मुझ को दुनियां में खुशहाल जी ॥ तेरे बिन मेरा कौन है दुखहरी ॥ हरी० ॥ तू ही जगत बीच तारन तरन । तू ही है सकल सृष्टि कारण करन ॥ विभीषण जो आया था तेरी शरण । तूने बखशीश लंका थी उसको करी ॥ हरी० ॥ करे बिनती दास सुन लीजिए । करो दूर दुःख दर्द सुख दीजिए ॥ तर्फ दास की तुम नजर कीजिए । तू कृपालु है सब जगत का हरी ॥ हरी० ॥ हरीहर हरीहर जपे हिरदे धार । संकट काटिये श्री कृष्ण मुरार ॥ जरासंध का कर

दिया पल में पार । गए उनके आगे जो नम्र कर हरी ॥ हरी० ॥ कृष्ण दास की विनती हर सुनी । सर्व सुखदिये तुम सबके धनी ॥ आनन्द भया बहुत करुणा करी । भक्त अपने की पदवी ऊँची करी ॥ हरी० ॥ करी हर कृपा दरश दिया दिखाई । अपनी जान संकट से लिया बचाई ॥ मन की मुरादें सभी मिल आई । पूर्ण कृपा कर दिया है हरी ॥ हरी० ॥ स्तोत्र पढ़े प्रीति कर नर जो । सफल जन्म उसका त्रिलोकी में हो । देवपुरी बीच बसे भक्त सो । इन्द्र और यम उसकी महिमा करी ॥ हरी० ॥ मेरी बार क्यों देर इतनी करी ॥ हरी० ।

(१९) सप्तश्लोकी गीता

ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन् मामनुस्मरन् । यः प्रयाति त्यजन् देहं स याति परमां गतिम् ॥ १ ॥

अर्थ—ब्रह्म स्वरूप का वाचक ओं उच्चारण करता हुआ देह को छोड़ कर अर्चिरादि मार्ग से जो अधिकारी जाता है वह परम गति को प्राप्त करता है ॥ १ ॥

अर्जुनउवाच—स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्यं जगत्प्रहृष्यत्यनुरज्यतेच ॥ रक्षांसि

भीतानि दिशो द्रवन्ति सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसंघाः ॥ २ ॥

अर्थ—अर्जुन बोले—हृषीकेश ! आपके माहात्म्य कीर्तन से सब जगत् प्रसन्न और प्रेम में मग्न हो रहा है। राक्षस लोग भयभीत हो दिशाओं को भागते हैं और सम्पूर्ण सिद्धों के समूह आपको नमस्कार करते हैं, सो योग्य ही है ॥ २ ॥

सर्वतः पाणिपादं तत् सर्वतोऽक्षि शिरोमुखम् ।
सर्वतः श्रुतिमल्लोके सर्वमावृत्य तिष्ठति ॥ ३ ॥

अर्थ—वह ब्रह्म चारों ओर हस्त, चरण, नेत्र, सिर, मुख, कर्णयुक्त है और लोक में जो वस्तु मात्र है उसमें धर्मभूत ज्ञान व्याप्त होके स्थित है ॥ ३ ॥

कविं पुराणमनुशासितारमणोरणीयांसमनुस्मरेद्यः ।
सर्वस्य धातारमचिंत्यरूपमादित्यवर्णं तमसः परस्तात् ॥ ४ ॥

अर्थ—कवि, पुराने सब पर अनुशासन करने वाले, सूक्ष्म से सूक्ष्म सबके धारण करने वाले, अचिन्त्य स्वरूप, सूर्य के न्याईं चमकीले, अन्धकार से परे ईश्वर का जो स्मरण करता है वह परम पद को पाता है ॥ ४ ॥

श्री भगवानुवाच—ऊर्ध्वमूलमधः शाखमश्वत्थं प्राहुरव्ययम् ।
छन्दांसि यस्य पर्णानि यस्तं वेद स वेदवित् ॥ ५ ॥

अर्थ—श्री कृष्ण भगवान् जी कहते हैं यह संसार अश्वत्थ (पीपल वृक्ष) रूपी है। सात लोकों के ऊपर समष्टि रूप चतुर्मुख ब्रह्मा जिसका मूल है और मृत्युलोक में सकल मनुष्य स्थावर पर्यन्त जिसकी शाखा है और प्रवाह रूप से अधिक इसी में श्रुति प्रतिसहित काम्यकर्म जिसके पत्ते वृक्ष को जो जानता है वही वेदवेत्ता है ॥ ५ ॥

सर्वस्य चाहं हृदि सन्निविष्टे, मत्तःस्मृतिर्ज्ञानमपोहनं च।
वेदैश्च सर्वैरहमेव वेद्यः वेदान्तकृद्वेदविदेव चाहम् ॥६॥

अर्थ—मैं सम्पूर्ण भक्तों के हृदय कमल में स्थित हूँ मुझसे ही स्मृति प्रत्यक्षादि रूप वस्तु या आत्मज्ञानी विलक्षण तर्क उत्पन्न होते हैं इसरं मैं ही मुख्यता से सर्व वेद प्रतिपाद्य कर्मफलदाता और वेद ज्ञाता हूँ ॥ ६ ॥

मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु।
मामेवैष्यसि युक्त्वैवमात्मानं मत्परायणः ॥ ७ ॥

अर्थ—हे अर्जुन ! मुझ में मन लगा, मेरा भक्त हो मेरी पूजा कर और मुझे ही नमस्कार कर ! इस प्रकार आत्मा को मुक्त करके निश्चय मझको पायेगा ॥ ७ ॥

(२०) एकश्लोकी रामायण

आदौ राम तपोवनादि गमनं, हत्वा मृगं कांचनम् ।
वैदेही-हरणं जटायु-मरणं सुग्रीव-सम्भाषणम् ॥
बाली-निर्दलनं समुद्रतरणं, लंकापुरी-दाहनम् ।
पश्चाद्रावण-कुम्भकर्ण हननम्, एतद्धि रामायणम् ॥ १ ॥

अर्थ—श्री रघुनाथ जी का जन्म, ब्याह होना, तपोवन में जाकर स्वर्ण के मृग को मारना, फिर सीता हरण, जटायु का मरण, सुग्रीव से भेंट, बाली को मारना, महावीर जी का सागर को लांघ लंका को जलाकर सुध लाना, पीछे रामचन्द्र जी से रावण कुम्भकर्ण का मारा जाना फिर अयोध्या का राज्य पाना, इतनी रामायण है ॥ १ ॥

(२१) एकश्लोकी महाभारत

आदौ पाण्डव धार्तराष्ट्र जननं लाक्षागृहे दाहनं, द्यूते श्रीहरणं वनादि-गमनं मत्स्याख्यं वेधनम् लीला गोहग्रहणं रणेऽत्तरण, संधि-क्रिया वर्द्धनं, पश्चाद् भीष्म कौरवादि हननम्, एतन् महाभारतम् ॥ १ ॥

अर्थ--प्रथम पांडव और धृतराष्ट्र का जन्म, तदनन्तर लाख का घर जो था उसको भस्म करना और वन में छिप कर रहते हुए स्वयम्वर में मछली का वेधन करना। फिर जुआ खेलना, तदनन्तर हार कर बनवास होना और विराट की गौओं का हरना बादमें लड़ाई की सामग्री तथा संधि की बातचीत करना। तदनन्तर भीष्म कौरवों का सर्वस्व नाश होना, पाण्डवों का राज्य होना। यह महाभारत का तत्व है ।

(२२) गायत्री मंत्र

ओं भूर्भवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।

अर्थ—हे सकल सृष्टि के रचयिता! प्राणदाता दुख दूर करने वाले प्रभो! हम में बुद्धि उत्पन्न करके हमें विधर्मियों से बचाइये। जिससे हम अच्छे कर्म करते हुए आपकी उपासना करें।

(२३) समाप्ति मंत्र

अच्युतं केशवं राम नारायणम् कृष्णदामोदरं वासुदेवं हरिम्।
श्रीधरं माधवं गोपिका वल्लभं जनकी नायकं रामचन्द्रं भजे ॥ १ ॥

(२४) श्री राम महामन्त्रम्

राम रामेति रामेति रमे रामे मनोरमे ।।
सहस्र नाम तत्तुल्यं रामनाम वरानने ।।

(२५) श्री कृष्ण महामन्त्रम्

ओं नमो भगवते वासुदेवाय,
ओं श्रीराधाकृष्णाय नमः ।

(२६) एक श्लोकी भागवत

आदौ देवकी देवगर्भ जननं गोपी-गृहे वर्द्धनम । माया पूतन जीव ताप हरणं गोवर्द्धनोद्धारणम् । कंस छेदन कौरवादिहननं कुन्ती सुत पालनम् । एतद्भागवतपुराणा कथितं श्रीकृष्ण लीलामृतम् ।।

(२७) समर्पण मन्त्र

त्वमेव माता च पिता त्वमेव,
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या च द्रविणं त्वमेव,
त्वमेव सर्वं मम देव देव ।।

(२८) ध्यान मन्त्र

शान्ताकारं भुजग शयनं पद्मनाभं सुरेशम् ।
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभांगम् ।।
लक्ष्मीकांतं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यम् ।
वंदे विष्णुर्भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ।।
कस्तूरीतिलकं ललाटपटले वक्षःस्थले कौस्तुभम् ।
नासाग्रे करमौक्तिकं करतले वेणुःकरे कंकणम् ।।
सर्वांग हरचंदनं सुललितं कण्ठे च मुक्तावलिः ।
गोपस्त्रीपरिवेष्टितो विजयते गोपाल चूड़ामणिः।।

—०—

(२९) शिव महामन्त्र

ओं नमः शिवाय

—०—

(३०) श्री बद्रीनाथ स्तोत्र

श्री मंद पवन सुगन्ध शीतल हेम मंदिर शोभितं। श्री निकट गंगा बहत निर्मल बद्रीनाथ विश्वम्भरम्। १॥ शेष सुमरन करत निशि दिन धरत ध्यान महेश्वरम्। वेद ब्रह्मा करत स्तुति बद्रीनाथ विश्वम्भरम् ॥ २ ॥ इन्द्र चन्द्र कुबेर दिनकर धूप दीप प्रकाशितम् विश्वम्भरम् ॥ ३ ॥ यक्ष किन्नर करत कौतुक ज्ञान गर्भ प्रकाशितम्। श्री लक्ष्मी कमला चँवर डोले बद्रीनाथ विश्वम्भरम् ॥ ४ ॥ यक्ष किन्नर करत कौतुक ज्ञान गर्व विकासितम् शाक्तगौरी गणेश शारद मुनि जन उच्चरम् ॥ ५ ॥ श्री योग ध्यान अपार लीला श्री बद्रीकैलाश एकदेव निरंजन शैल सिखर महेश्वरम्। श्री राजा युधिष्ठिर करत स्तुति श्री बद्रीनाथ विश्वम्भरम्। श्री बद्रीनाथ जी के पंच रत्न पढ़त पाप विनाशनम्। कोटि तीर्थ भवेत पुन्यं भवमुक्ति फलदायकम्।

(३१) आरती श्री कृष्ण जी की

ओ३म् जय श्री कृष्ण हरे प्रभु जय श्री कृष्ण हरे।
भगतन के दुःख सारे पल में दूर करे ॥ जय श्री कृष्ण हरे ॥

परमानन्द मुरारी मोहन गिरधारीः जै रस रास बिहारी जय२ गिरधारी। ओं०
करकंकन कटिकंकन श्रुतिकुंडलवाला, मोरमुकुट पीतांबर सोहे बनमाला। ओं०

दीन सुदामा तारे दरिद्रदुख टारे, गज के फंद छुड़ाये भवसागरतारे । ओं०
हिरण्यकश्यप संहारे नर हरि रूप धरे, पाहनते प्रभु प्रगटे जनके जीवपड़े । ओं०
केशी केश विदारे नरकुबेर तारे, दामोदरछवि सुन्दर भगतन रखवारे । ओं०
काली नाग नथैया नटवर छवि सोहैं, फनफन नृत्य करते नागन मन मो हैं । ओं०
राज्यविभीषण थापे सीतासोक हरे, द्रुपदसुता पतराखी करुणा लाजभरे । ओं०

(३२) पुनः गंगा जी की आरती

जग भगवतीगंगेमांजयजय भगवती गंगे, तरलतरंगे दुर्मतिभंगे सुरमतीदेसंगे।
विष्णु पदादनुसरणी खंडिन ब्रह्माण्डे, शंकर जटा के विहरति अतिरंगे ।
जाह्नवीनाम तुम्हाराशोभित जै अम्बे भागीरथी मतिलागान सगरजग उद्धारणे ।
अघनाशन भवशासनदासेन शिवतनुजे, त्रासनमोह विकारनकाशन ब्रह्मपददे ।
सुरसरि धारा सधारा कलितलटारन जशरणागत प्रतिपालक बालक शिवसुखदे ।
शिवसरणा जगतरणी हरणा भवसिंधो, हरिपद दाताधाता वंदित जगमाता ॥
कामक्रोध विदारणी हरिण दारुण दूरसुभगे, मायेगि परतिय सुरधुनि गुणजागे ।

तव धारा जयपारा दर्शित भक्त जने, सेवत काशिवाणी अखिल जन्य तरने ।
शेष नरेश कवेश गुण गावें तेरा पूरी आसू निराशा सुरसरि सुख गंगे ।

(३३) पुनः श्री शिव स्तोत्र शिव आरती

जयशिव ओंकारा हरशिव ओंकारा । ब्रह्माविष्णु सदा शिव अर्द्धांगी धारा ।टेक।
एकानन चतुरानन पंचानन राजे, हंसानन गरुड़ासन वृषवाहन साजे ॥ जै ॥
दो भुज चारु चतुर्भुज ते सोहैं, तीनों रूप निरखता त्रिभुवन जन माहे ॥जै॥
जयमाला वनमाला रुण्डमाला धारी चंदन मृगमद सोहे, सोहे शशिधारी ॥जै॥
श्वेताम्बर बाघाम्बर पीताम्बर अंगे, सनकादिक ब्रह्मादिक भूतादिक संगे ॥जै॥
कर में श्रेष्ठ कमण्डल चक्र त्रिशूल धरता जगकर्ता दुखहर्ता जगपालन कर्ता ॥जै॥

एहि भाँति गौरि असीस सुनि सिय सहित हिय हर्षित अली ।
तुलसी भवानिहि पूजि पुनि पुनि मुदित मन मन्दिर चली ॥
सो०—जानि गौरि अनुकूल सिय हिय हर्ष न जाय कहि ।
मञ्जुल मंगल मूल, वाम अंग फरकन लगे ॥

प्रणवाक्षर के मध्ये यह तीनों एका ॥
त्रयगुन शिव की आरती जो कोई गावै ॥
कहत शिवानन्द स्वामी मनवांछित फल पावै ।। जै ॥

(३४) आरती गणेश जी की

जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा ।। माता जाकी पार्वता पिता महादेवा । लड्डुवन का भोग लगे संत करे सेवा ।। एक दन्त दयावन्त चार भुजा धारी । माथे सिंदूर सोहे मूसे की असवारी ॥ अन्धन को आँख देत कोढ़िन को काया । बाँझन को पुत्र देत निर्धन को माया ।। जय० ॥

(३५) आरती तुलसी जी की

तुलसी महारानी नमो नमो हर की पटरानी नमो नमो। जाके दरस परस अविनाशी, महिमा वेद पुराण बखानी । नमो० । सुन्दर पत्र लघु मन मजर हरा चरण कमल लिपटाली । नमो० । ध्यान धरत नारद

मुनिज्ञानी नमो नमो, प्रेम प्रीत मेवा हरी बस कीन्हीं । सांवरी सूरत मन भानी नमो नमो ।

(३६) आरती श्रीलक्ष्मी जी की

जय लक्ष्मी देवी जय लक्ष्मी माता, सुरनर मुनिजन सेवत सुख सम्पति दाता । जय० । ऋद्धि सिद्धि मोहे देवो आदि भवानी हो । उपमा तेरा ऐसा वेद बखानी हो । जय ० । योग यज्ञ अरु साधन कुछ न कम किया, दान धर्म सब मेरे मन से नाश हुआ ॥ जय० ॥ जो कोई महिमा तेरी माता जो गावे । हेमराज ब्रह्मानन्द वह निश्चय फल पावे "जै लक्ष्मी माता ॥

(३७) पुनः श्रीदुर्गा जी की आरती

सुन मेरी देवी पर्वत वासिना कोई तेरा पार न पाया ॥ टेक ॥ पान सुपारा ध्वजा नारियल ले माता तेरी भेंट चढ़ाया ॥ २ ॥ सावी चोली तेरे

अंग विराजे केसर तिलक लगाया ॥ सुन १ ॥ ब्रह्मा वेद पढ़े तेरे द्वारे शंकर ध्यान लगाया ॥ सुन २ ॥ नंगे २ पग से तेरे सन्मुख अकबर आया सोने का छत्र चढ़ाया ॥ सुन ३ ॥ ऊंचे २ पर्वत बन्यो दीवाली नीचे महल बनाया ॥ सुन ४ ॥ सतयुग द्वापर त्रेता मध्ये कलयुग राज बसाया ॥ सुन० ५ ॥ धूप दीप नैवेद्य आरती मोहन भोग लगाया ॥ सुन ६ ॥ ध्यान भगत मैया तेरा गुण गाये मन वांछित फल पाया ॥ सुन ७ ॥

(३८) आरती श्री दुर्गा जी की

मंगल की सेवा सुन मेरी देवा हाथ जोड़ तेरे द्वार खड़े । पान सुपारी ध्वजा नारियल ले ज्वाला तेरी भेंट करे ॥ सुन जगदम्बा करे न विलम्बा सन्तन का भण्डार भरे । सन्तन प्रतिपाली सदा कुशाली जय काली कल्याण करे ॥ बुद्धि विधाता तू जग माता मेरा कारज सिद्ध करो । चरण कमल को लियो आसरो शरण तुम्हारी आन परा ॥ जब जब भीड़ पड़े भक्तन पर तब तब आप सहाय करो । बार बार ते सब जग मोह्यो तरुण रूप

अनुरूप धरो ॥ माता होकर पुत्र खिलावे कहीं भार्या होकर भोगकरे । संतन सुखदाई सदा सहाई सन्त खड़े जयकार करे ॥ ब्रह्मा विष्णु महेश सहस-फन लिये भेंट तेरे द्वार खड़े । अटल सिंहासन बैठी माता सिर सोने का छत्र फिरे ॥ करे शनिश्चर कुमकुम वरणों जभलों कंठ हर हुक्म करे। शंख खप्पर त्रिशूल हाथ लिये रक्त बीज की भस्म करे ॥ शुंभ निशुंभ पछाड़े माता महिषासुर को पकड़ दले । आदित बार आदिकाश राजत अपने जनको कष्ट हरे ॥ कोप होम कर दानव मारे चण्ड मुण्ड सब चूर करे । तब तुम देखो दया रूप होय पल में सकट दूर करे ॥ सौम्यस्वभाव धरो मोरी माता जान की अरज कबूल करे । सिंह पीठ पर चढ़ी भगवता अटल भवन में राज करे ॥ दरशन पावे मंगल गावे सिध साधू वर भेंट धरे । ब्रह्मा वेद पढ़े तेरे द्वारे शिव शंकर जी ध्यान धरे ॥ इन्द्र कृष्ण तेरी करे आरता चमर कुबेर झुलाये रहे । जय जननी जय मात भवानी अटल भवन में राज्य करे ॥

(३९) रामचन्द्र जी की आरती

आरती कीजै श्री रामचन्द्र की । हरि २ दुष्ट दलन सीतापति जी की
॥ टेक ॥ पहली आरती पुष्पकी माला । काली नाथ लये गोपाला ॥ १ ॥
दूसरी आरती देवकी नन्दन । भक्त उबारन कंस निकन्दन ॥२॥
तीसरी आरती त्रिभुवन मोहे । रत्न सिंहासन सीता राम जी को सोहे ॥३॥
चौथीं आरती चहुं युग पूजा । देव निरंजन स्वामी और न दूजा ॥४॥
पाँचवीं आरती राम को भावे । राम जी का नाम देव जी गावे ॥५॥

(४०) हनमान जी की आरती

बोलो जय हनुमान विराजे बंका । जय महावीर विराजे बंका ॥ जय
अञ्जनि पुत्र महा बल योद्धा । तीन भवन में तेरा डंका ॥ जय
जलधि लाँघ सिया सुधि लयो । राक्षस मार जलाया लंका ॥ जय

अहिरावण की भुजा उखारइयो । रावण के मन में भयो शंका ॥ जय रावण मार विभीषण कांप्यो । जय जय राम जी ही भयो लंका ॥ जय

(४१) आरती यमुनाजी की

जय भानु सुता सुखा दाना बरदानी । जय जय यमुना महारानी ॥ जय रविजा जय जय अघ बैनी । जय कालिंदता स्वर्ग नैनी ॥ यमके त्रास मिटानी जय जननी ॥ १ ॥ जय जय भगनि जय बरहाना । जयसुर बन्दित होय सहाई अदभुत महिमा मानी गुण खानी ॥ २ ॥ जय निज जन के संकट हरनी । महिमा अद्भुत वेदन बरनी ॥ मोहन की पटरानी पहिचानी ॥ ३ ॥ जय भवसागर तारणी माता । कृपा करो जन आनन्द दाता । अगम मुकुन्द बखानी सनमानी ॥ ४ ॥

(४२) महात्मा गांधी का भजन

उठ जग मुसाफिर भोर भई अब रन कहाँ क्यों सोवत है । जो जागत है सो पावत है जो सोवत है सो खोवत है । टुक नींदसे अंखियां खोल ज़रा

और अपने रब से ध्यान लगा। यह प्रीत करन की रीत नहीं रब जागत है तू सोवत है ॥ जो कल करना हो आज करले, जो आज करना हो अबकरले। जब चिड़ियों ने चुग खेत लिया फिर पछताए क्या होवत है॥ नादान भुगत करनी अपना ऐ पापी पाप में चैन कहाँ। जब पाप की गठरी सीस धरी फिर सीस पकड़ क्यों रोवत है ॥

(४३) रघुपति राघव राजा राम

रघुपति राघव राजाराम। पतित पावन सीता राम ॥
सीता राम जय सीता राम। भज प्यारे तू सीता राम ॥ रघुपति०
ईश्वर अल्लाह तेरे नाम। सबको सन्मति दे भगवान ॥
रघुपति राघव राजा राम। पतित पावन सीता राम ॥

(४४) अबकी राखो टेक हमारो

जैसी लाज रखी पारथ की भारत युध मँझारी ॥ सारथी होके रथ को हांकयो, चक्र सुदर्शन धारी। भगत की टेक न टारी॥ १ ॥ जैसी लाज रखी

द्रोपदी की। होनी न दीन्ह उघारो। खैंचत खैंचत दोउ भुज थाके। दुःशासन थकि हारी। चीर बढ़ायो मुरारी ॥ २ ॥ सूरदास की लज्जा राखी, अब की है रखवारी ॥ राधे राधे श्री वृषभानु दुलारी ॥ सरन ताकि आयो तुम्हारो ॥ ३ ॥ अबकी राखो टेक हमारी ॥

(४५) भजन

भारत में फिर आजा, गिरवर उठाने वाले। सोतों को फिर जगाजा गीता के गाने वाले। गूँजा था जिस से मिधुवन नाचा था जिससे त्रिभुवन। वह तान फिर सुनाजा, बंसी बजाने वाले। दुःखद्वन्द्व बढ़ रहे हैं दुष्काल पड़ रहे हैं। फिर वह कष्ट मिटाजा, गौएं चराने वाले ॥ है "राधेश्याम" निर्बल, जन तेरे भक्त वत्सल। बिगड़ी को फिर बनाजा, बिगड़ी बनाने वाले ॥

(४६) अथ श्री गर्भ गीता

श्री कृष्ण भगवान् जी का वचन है जो प्राणी इस गर्भ गीता का विचार करता है फिर गर्भ योनि में नहीं आवेगा ।

अर्जुनोवाच –हे भगवान् ! यह प्राणी गर्भ विषे किस दोष कर आता है ? हे प्रभु जी, जब जन्मता है तब इसको जरा आदि रोग लगते हैं फिर मृत्यु होती है । हे स्वामी ! वह कौन कर्म है जिसके करने से जन्म मरण से रहित होवे । श्री भगवानुवाच–हे अर्जुन ! यह जो मनुष्य है सो अन्धा मूर्ख है और संसार की प्रकृति के साथ प्रीत करता है । और इसे यही चिन्ता रहती है कि यह पदार्थ मैंने पाया है और मैं यह पाऊँगा । यह चिन्ता इस प्राणी के मन से उतरती नहीं । आठ पहर माया को ही माँगता है । इन बातों के कारण बारम्बार जन्मता और मरता रहता है । गर्भ विषे दुःख पाता है । अर्जुनोवाच—हे श्री कृष्ण जी ! मन मस्त हाथी की न्याई है, तृष्णा इसकी शक्ति है । यह मन इन पाँचों के वश में है–काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार । और पाँचों में से अहंकार बहुत बली है । कौन यत्न है जिससे मन वश में होवे । श्री भगवानुवाच—हे अर्जुन ! यह मन निश्चय कर हाथी की न्याई है । तृष्णा इसकी शक्ति है । मन पाँचों के वश में है । अहंकार इन में श्रेष्ठ है। हे अर्जुन, जैसे हाथी कुंडे के वश होवे सो मन रूपी हाथी को वश करने का ज्ञान रूपी कुण्डा है । अहंकार करने से वह जीव नरक में पड़ता है । अर्जुनोवाच—

हे श्री कृष्ण भगवान् जी ! एक तुम्हारे नाम के लिये वनों में फिरते हैं, एक वैरागी हैं, एक धर्म करते हैं तिन विषे कैसे जानिए कि वैष्णव कौन है ? श्री भगवानुवाच—हे अर्जुन, एक मेरे नाम के लिए वनों में फिरते हैं, एक संन्यासी कहलाते हैं, एक सिर पर जटा बांधते हैं, एक भस्म लगाते हैं तिन में मैं नहीं हूँ। क्यों कि तिन्ह विषे अहंकार है। इनको मेरा दर्शन दुर्लभ है। अर्जुनोवाच—हे कृष्ण भगवान् जी ! वह कौन पाप है जिसे करके स्त्री मर जाती है जिसे करके पुत्र मर जाते हैं और नपुन्सकता कौन पाप से होता है। श्री भगवानुवाच—हे अर्जुन ! जो किसी से करजा उठाता है और देता नहीं इस पाप से स्त्री मर जाती है, जो किसी की अमानत रखी हुई पचा लेता है उसके पुत्र मर जाते हैं। जो किसी का कार्य सबसे पहले करूँगा, ऐसा कहे पर जब समय आ पड़े तब तिसका कार्य नहीं करे इस पाप से नपुन्सक होता है। अर्जुनोवाच—हे श्री कृष्ण भगवान जी ! कौन पाप से मनुष्य सदैव रोगी रहता है, गधे का जन्म पाता है ? स्त्री का जन्म, टट्टू का जन्म क्यों कर पाता है और बिल्ली का जन्म किस पाप से होता है ? श्री भगवानुवाच—हे अर्जुन ! जो मनुष्य कन्या का दाम लेते हैं और साधु ब्राह्मण के दोषी हैं सो मनुष्य सदा रोगी रहते हैं। और जो विषय विकार के वास्ते मदिरा पान करते हैं सो टट्टू का जन्म पाते हैं। और जो झूठी गवाही भरते हैं सो स्त्री का जन्म पाते हैं। जो रसोई बनाकर पहले आप खा लेते हैं और पीछे परमेश्वर के लिए दान करते हैं सो बिल्ली और स्त्री का जन्म पाते हैं

और जो मनुष्य अपनी जूठी वस्तु दान करते हैं वह दासी स्त्री का जन्म पाते हैं। अर्जुनोवाच—हे श्रीकृष्ण भगवान् जी! जो एक मनुष्य को स्वर्ण दिया है, कई मनुष्यों को आपने हाथी, घोड़े दिये हैं उनने कौन पुण्य किया है। श्री भगवानुवाच—हे अर्जुन! जिन्होंने स्वर्ण दान किया है सो तिनको हाथी घोड़े वाहन मिलते हैं, जो कन्या दान परमेश्वर निमित्त करते हैं सो मनुष्य का जन्म पाते हैं। अर्जुनोवाच—हे श्री भगवान् जी! एक की सुन्दर विचित्र देह है, एक के घर सम्पत्ति है, एक विद्वान् है तिनने कौन पुण्य किया है? श्री भगवानुवाच—हे अर्जुन! जिनने अन्नदान किया है तिनका स्वरूप सुन्दर है। जिनने विद्या दान की है सो विद्वान् होते हैं। जिनने गुरुदेव की सेवा की है सो पुत्रवान् होते हैं। अर्जुनोवाच—हे भगवान्! एक की धन से प्रीति होती है। एक स्त्रियों से प्रीति करते हैं। तिसका क्या कारण है? श्री भगवानुवाच—हे अर्जुन! राजपाट, धन, स्त्री सब नाश रूप हैं। मेरी भक्ति का नाश नहीं है। अर्जुनोवाच—हे श्री कृष्ण भगवान! राजपाट, और विद्या किस धर्म से मिलती है? श्री भगवानुवाच—हे अर्जुन जो प्राणी श्री काशी जी में निष्काम भक्ति करते हुए देह त्यागते हैं सो राजा होते हैं। जो गुरु की सेवा करते हैं सो विद्वान् होते हैं। अर्जुनोवाच—हे श्री कृष्ण भगवान्! एक को धन संचित मिलता है, एक सारी उमर रोग से रहित होते हैं सो कौन्य पुण्य है? श्री भगवानुवाच—हे अर्जुन! जिसने गुप्त दान किया है उसको संचित धन मिलता है।

जिनने परमेश्वर के लिए पराया काम संवारा है वे रोग से रहित होते हैं। अर्जुनोवाच—हे श्री कृष्ण भगवान ! कौन पाप से अमली होते हैं ? गूँगे और कुष्ठी किस पाप से होते हैं ? भगवानुवाच--हे अर्जुन ! जो अपनी कुल की स्त्री से गमन करते हैं सो अमली होते हैं। जो गुरु से विद्या पढ़कर मुकर जाते है सो गूँगे होते हैं। जिसने गौघात करी है सो कुष्ठी होते हैं। अर्जुनोवाच--हे श्री कृष्ण भगवान जी! एक की देह में रक्त विकार होता है। एक दरिद्र होते हैं। कोई नर खरड़ बाहू होते हैं। एक अन्धे होते हैं। एक पिंगल होते हैं। यह कौन पाप से होते हैं ? एक बाल विधवा होती हैं। सो कौन पाप से होती हैं ? श्री भगवानुवाच--हे अर्जुन ! जो सदा क्रोधवान् रहते हैं तिनको रक्त का विकार होता है। जो मलीन रहते हैं सो दरिद्री होते हैं। जो कुकर्मी ब्राह्मण को दान देते है तिनको खरड़ बाहु होती है। जो प्राणी स्त्री नंगी देखता है और गुरु की स्त्री पर कुदृष्टि करता है सो अंधा होता है। जिसने गौ ब्राह्मण को लात मारी है सो लंगड़ा पंगु होता है। जो स्त्री अपने पति को छोड़ कर पराये पुरुष से संग करती है सो बाल विधवा होती है। अर्जुनोवाच—हे भगवान् श्री कृष्ण जी ! तुम पारब्रह्म हो। तुम्हारे को नमस्कार है। आगे मैं तुम्हें सम्बन्धी कर जानता था अब मैं आपको साक्षात् परमेश्वर कर जानता हूँ। हे पारब्रह्म जी ! गुरु दीक्षा कैसी होती है सो कृपा कर कहो। श्री भगवानुवाच--हे अर्जुन ! तू धन्य है, तेरे माता पिता भी धन्य हैं जिनका तू ऐसा पुत्र है कि जिसने

गुरु दीक्षा पूछी है। हे अर्जुन ! सारे संसार के गुरु श्री जगन्नाथ जी हैं, विद्या के गुरु श्री काशी हैं। चारों वर्णों का गुरु ब्राह्मण है। ब्राह्मण का गुरु संन्यासी है। संन्यासी उसको कहते हैं जिसने सब मत त्याग करके मेरे विषय मन लगाया है, वही संन्यासी जगत् का गुरु है। हे अर्जुन ! यह बात ध्यान देकर सुनने की है कि गुरु कैसा करे। जिसने इन्द्रियाँ जीती हैं, जिसको संसार ईश्वर रूप नज़र आता है, जगत् से उदास है, ऐसा गुरु करे। जो परमेश्वर का जानने वाला होवे तिस गुरु की पूजा सब तरह से करे। हे अर्जुन ! जो गुरु का भक्त होता है, जो प्राणी गुरु से विमुख होकर मेरा भजन करते हैं, उनका भजन करना असफल है। जो प्राणी गुरु से विमुख हैं तिनको सप्त ग्राम जलाने का पाप होता है। गुरुविमुख प्राणी का दर्शन चंडाल के तुल्य है। जो गृहस्थी गुरु के बिना हैं सो चंडाल के समान हैं। जिस तरह मदिरा का बर्तन होवे उसमें फिर गंगाजल पावो सो अपवित्र होता है। इसी तरह से गुरु से विमुख का भजन सदा अपवित्र है, जिसके हाथ का दिया देवते भी नहीं खाते, तिसके सर्व फल निष्फल हैं। कूकर, शूकर, गधा, काक इन सब योनियों में सर्प खोटी योनि है। इन सब से वह मनुष्य खोटा है जो गुरु नहीं धरता। गुरु बिना गत नहीं होती, अवश्य नरक को जावेगा। गुरु दीक्षा बिना प्राणी के सर्व कर्म निष्फल हैं। हे अर्जुन ! चार वर्णों को मेरी भक्ति और सेवा करना योग्य है। तैसे गुरु धार के गुरु की भक्ति और सेवा करना योग्य है।

जैसे सब नदियों में श्री गंगा जी श्रेष्ठ हैं, सर्व व्रतों में श्री एकादशी जी श्रेष्ठ हैं ऐसे ही हे अर्जुन! सब शुभ कर्मों में गुरु-सेवा उत्तम है। गुरु दीक्षा बिना प्राणी पशु योनि में फल भोगता है, चौरासी में भरमता रहता है। अर्जुनोवाच--हे भगवान् श्री कृष्ण जी! गुरु दीक्षा क्या वस्तु है? श्री भगवानुवाच--हे अर्जुन! तेरा धन्य जन्म है। जिसने यह प्रश्न किया है। गुरु दीक्षा हरि का नाम है। गुरु उपदेश करते हैं। यह चारो वर्णों को जपना श्रेष्ठ है। हे अर्जुन! जो गुरु की सेवा करता है मेरी उस पर प्रसन्नता है। वह चौरासी से छूट जावेगा जन्म मरण से रहित होगा, नरक नहीं भोगेगा। जो प्राणी गुरु की सेवा नहीं करता सो साढ़े तीन करोड़ वर्ष नरक भोगता है। जो गुरु की सेवा करता है उसको कई अश्वमेध यज्ञ किये का फल होता है। गुरु की सेवा ही मेरी सेवा है। हे अर्जुन! इस मेरे तेरे संवाद को जो प्राणी पढ़ें व सुनेंगे सो गर्भ दुःख से बचेंगे, चौरासी कट जावेगी। इसी करके इस पाठ का नाम गर्भ गीता है। श्री कृष्ण महाराज जी के मुख से अर्जुन ने श्रवण करा है गुरु दीक्षा लेना उत्तम कर्म है। तिसके फल से नरक और चौरासी से जीव बचा रहता है, भगवान प्रसन्न होते हैं।

—*—

[४७] नित्य कर्म गीता अर्थात् दोहावली गीता स्वामी बलीनाथकृत

निवेदन: सज्जनो ! भगवद्गीता के समान ज्ञान कर्म व मो फलदायक और कोई पुस्तक नहीं, परन्तु भगवद्गीता संस्कृत में या वार्तिक मिलती है, जिसको हर एक पुरुष सहज में नहीं पढ़ सकता। इस कठिनाई को बिचार मैंने बड़े यत्न से छन्दोबन्दी करके सुगम कर दी है। जिसे सब सज्जन स्त्री पुरुष पढ़ें और पढ़ावें, यह हिन्दू मात्र का परम धर्म है।

ओं ईश्वर दीनबन्धु दीनानाथ। पतित पावन जगत् रक्षक हाजिर नाजिर निरञ्जन निराकार साकार ज्योतिस्वरूप सर्वशक्तिमान् आदि अनादि सत्य हैं, भूत भविष्यत् सत्य। वर्तमान भी सत्य है वेद कहैं यह तत। ओं धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र में सेना भई अपार। कौरव ते पांडव जुड़े, आये कृष्ण मुरार॥ धृतराष्ट्र पूछने लगे, कहो संजय बुद्धिमान। क्या होत कुरुक्षेत्र में हमसे कहो बखान॥ कहे मन्त्री कर जोड़कर सुनो राज महाराज। पांडव की सेना निरख दुर्योधन मन लाज। अर्जुन अब विनती करें श्री कृष्ण सो राज। रथ हमारे को ले चलो, सेना देखन काज। चौ० हाक्यों रथहिं सेना मध्य जाई। अर्जुन देख सेना मुरझाई॥ काँपत पार्थ हिया विशाल, शिथिल अंग सब काँती भाल॥ भाई बन्धु और कुटुम्ब अपारा। इन को मार नहीं निस्तारा॥ हमारे कुल के बड़े महान। भीष्म जैसे है गुणखान॥ गुरु द्रोण और उनके भाए। इन को मार जुगों भल नाए॥ मार गुरू को राज कमाना। इससे भला माँग कर खाना॥ कारण राज भाई बन्धु मारूं। जिन्दा लोक परलोक बिगाड़ूं॥ चार दिवस के हैं महिमाना।

रुधिर दग्ध नहिं भोजन खाना॥

सोरठा

यह विचार अर्जुन कियो, दियोधनुष को डार ।
लड़ने की इच्छा तजी, श्रीकृष्ण देखत भए ॥

श्री भगवानुवाच

क्या होता है या समय पारथ हो रणधीर ।
हम सेती वर्णन करो, नयन जात क्यों नीर ॥
नयन जात क्यों नीर, हुआ क्यों विकलशरीर ।
शोकमग्न मन क्यों किया राखो हृदय गम्भीर ॥

अर्जुनोवाच

वर्णन करूँ क्या भगवान् । लागत जैसे हो मन को बान ॥ काहे हेत हम यहाँ पधारे । शत्रु कोई न देख हमारे । चतुरंगी सेना जो आई । इस में हमारे सब नाताई । भाई बन्धु औ चचेरे फुफेरे । नानू ससुर पितामह मेरे ॥ गुरु और सुत उनके साथ । देखत जिन्हें वदेरे गात ॥ युद्ध कहाँ से कीजो भाई । जाको भार अभय हो जाई ॥ भाई बन्ध गुरु मारे जोय । जन्म जन्म कुष्ठी ताँ होय ॥ भाई बन्धु को मारे पाप । इनकी तिरिया करे विलाप ॥ तजें सनातन कुल के धर्म । वर्णसंकर सन्ताने जन्म ॥ पिण्ड आदि क्रिया सब जाई । पितर जाय पुरी जमराई ॥ ऐसा नीच कर्म में जान । शिथिल गात गिरे धानु बान ॥ दुर्योधन है हमारो भाई । "नाथ" युद्ध मम वाँछा नाहीं ॥

श्री भगवानुवाच

अर्जुन आज हुए नादान । वचन कहत हो शिशु की बान ॥ हम जानत थे तुम हो माहर । देखा आज युद्ध में कायर ॥ शास्त्र वेद भूले सब तेरे । माया मोह किये मन डेरे ॥ मन को लाय सुनो मम बाता । भरम पड़ा है तुझ के गाता ॥ कई बार पसरियो पसारा । कई बार लुप्त संसारा ॥ कई बार भीष्म अरु

द्रोणा । पैदा हुए किया फिर गौणा ॥ कई बार दुर्योधन होई । इन संग तुम्हारो युद्ध मचोई ॥ कई बार पांडव कुल मोहे । पैदा हुए युधिष्ठिर राये ॥ कई बार भाई बन्धु जान । कई बार मात पितु मान ॥ कई बार यह उपजी सृष्टि । कई बार प्रलय की दृष्टि ॥ कई बार सुर असुर समूहा । कई बार शशि सूरज हुआ ॥ कई बार तू पैदा जान । कई बार मैं प्रकट महान् ॥ कौन किसी को मारे आप । कौन किसी को दे संताप ॥ कौन किसी का बन्धु जान । कौन किसी संग रहे मलान ॥ अजर अमर यह जीव पछानों । अजर अमर यह काया मानो ॥ जीर्ण वस्त्र छोड़ो जैसे । आत्मा तजे यह काया तैसे ॥ कर्म गति सो जाये भाई । दूसरे काया रहे समाई ॥ काटे कटे न जारे जरे । सूखे पवन न डूबे मरे ॥ नित सदा यह आत्मा जानो । यह विचार युद्ध में मन ठानो ॥

अर्जुनोवाच-

नाशवान यह काया नाथ । नाशवान सृष्टि उत्पात ॥ नाशवान यह बन्धु सहेले । नाशवान यह सभी झमेले ॥ काहे हेत फिर युद्ध कराओ । काहे हेत मोहे पाप लगाओ ॥ काहे हेत यह माया मोह । काहे हेत दर्प धन खोह ॥ काहे हेत यह करूँ पसार । मरण काल जो नाथ हमार ॥

श्री भगवानुवाच

मन की यह कल्पना जान । मन त्रिगुण में रहे समान ॥ मन ही हँसत मन ही रोय । मन पुरुष की जात वंगोय ॥ मन ही करत बड़ी चतुराई । मन ही जीवन को रहे भरमाई ॥ मन ही स्थिर करो धनन्जय । मन को बाँध कर्म के फंदे ॥ मन तो फल की आशा छोड़ ।

मन शुभ कर्म लगाओ ठोड़ ॥ कर्म तजे जो ही नर मूढ़ । कर्म किये बिन ज्ञान न गूढ़ ॥ कर्म किये बिन सिद्ध न होए । कर्म किये बिन पाय न खोए ॥ कर्म किये बिन नहीं छुटकार । कर्म किये बिन होत न पार ॥ कर्म गति है सकल जहान । वेद श्रुति यह करें बखान ॥ कर्म किये बिन ज्ञान न पाये । ज्ञान पाये बिन मुक्ति नाये ॥ ज्ञान मुक्ति की जानो सार । ज्ञान पाये मिटे अन्धकार ॥ ज्ञान कर्म में सृष्टि उपाऊँ । ज्ञान कर्म जपयोग सिखाऊँ ॥ ज्ञान कर्म में ले अवतार । ज्ञान कर्म टारूँ महि भार ॥ ज्ञान कर्म मोहे रूप अनेका । ज्ञान कर्म से रहूँ त्रिवेका ॥ ज्ञान कर्म विस्तार बड़ाई । ज्ञान कर्म सूक्ष्म हो जाई ॥ ज्ञान कर्म जा चीर समाऊं । ज्ञान कर्म सब कर्म चलाऊं ॥ ज्ञान राख पार्थ उर माहीं । कर्म करो भलो लग ताहीं ॥ क्षत्री कर्म हैं तुम्हारो भाई । धर्म राख अब करो लड़ाई ॥ धर्म कर्म में साथी होवे । धर्म किये यश लोकी होवे ॥ धर्म विप्र का विद्या जान । पढ़े वेद और करे बखान ॥ क्षत्री धर्म सब रक्षा करे । विद्या पढ़े पुण्य दान उसरे ॥ धर्म वैश्य पुण्य बनिज बखान । शूद्र सब की सेवा मान ॥ धर्म तजे जो अपना वीर । मिले न मानुष ताहि शरीर ॥ सकल लोक में निन्दा होये । नरक मिले पुनि धर्म ही खोये ॥ ऐसो जान करो तुम युद्ध । पर हर कायरता की बुद्ध ॥ धर्म युद्ध में जो नर मरे । बहुरि चौरासी जन्म न पड़े ॥

अर्जुनोवाच

मन है चंचल यादवराय । मन बस करने का कहो उपाय ॥ मन में होते है अनेक तरंग । शुभ अशुभ नहीं सूझत रंग ॥ मन दोषी है सकल जहाज । भरमत वेद है पवन समान ॥

मन मेरा नहीं स्थिर नाथ। मन को कौन चलावे साथ ॥

श्री भगवानुवाच

पाँच चोर हैं भीतर तेरे। काम, क्रोध, मोह, लोभ बड़ेरे। पाँच पाँच के साथी जान। हाथ पाँव जो इन्द्री मान ॥ पाँच बड़े यह शत्रु भाई। शुभ कर्म न दें मन जाई ॥ इनको त्याग खरा मन होई। जैसे कंचन आग बलोई ॥ प्राण अपान करो फिर एक। राखो स्वास को मस्तक टेक ॥ यां ते बुद्धि स्थिर होई। मिटे कल्पना मन की दोई ॥ बुद्धि तीन तरह की जान। सात्विक राजस, तामस मान ॥ बुद्धि जैसे करें आहार। मधुर, अम्ल और कटु विकार ॥ तैसे गुण अवरते माही। शान्ति, तेज क्रोध उपजाई ॥ तीन गुणों से न्यारा रहे। योगी सोई परम गति लहे ॥ योग सभी ते ऊंचा जाने। तप ज्ञान और यज्ञ बखाने ॥ योग युक्त को जाने आप। योग किये मिते सन्ताप ॥ योग सब व्याधि को हरता। योग सर्व-सृष्टि का करता ॥ योग ही तीरथ फल उपजावे। योग किये व्रत नेम समावे ॥ योग करत सब देवी देवा। योग बिना नहिं पावत मेवा ॥ योग सकल साधन का सार। योग किये मिटे अंधकार ॥ योग प्रथम मैं भानु सिखावा। गूढ़ भेद है तोय बतावा ॥ अजर अमर होय काया रहे। टूटे जन्म मरण का भय ॥ अर्जुनोवाच ॥ प्रथम जन्म सूरज गिरधारी। पाछे उत्पत्ति हुई तुम्हारी ॥ फिर तुम कैसे योग सिखायो। सूरज को मोहे भेद बताओ ॥ यह संशय मेरे मन माही। नाथ निहारो कृपा साई ॥

श्री भगवानुवाच

अर्जु न सुन मैं तोहि सुनाऊँ । गूढ़ भेद जो आप बताऊँ । मैं हूँ ईश सब जग का कर्ता । उत्पत्ति पालन हूँ संहरता ॥ मेरी माया है विस्तार । राखा बाँध सकल संसार ॥ जब यह धर्म घटै जग माहूँ । ले अवतार मैं ताहे बढ़ाऊँ ॥ दोहा ॥ सब जीव में अंश मम, यह परंतप जान । तुम सेती वर्णन करूँ, मुख्य २ प्रधान ॥ उत्पत ब्रह्मा जान मोहे, पालन विष्णु रूप । संहरता शिव जी अहूँ, ज्योति में रवि भूप ॥ तारागण में हूँ शशी, वायु माहि मारीच । चतुर्वेद में साम हूँ, इन्द्र हूँ शूरों बीच ॥ मन इन्द्री में चेतना, परन्तु जो सकल शरीर । वसुओं माँहि अग्नि हूँ, यज्ञों में कुबेर ॥ पर्वत माहि सुमेर हूँ कमकांड़ी भृगु जान । सेनापति स्कंध हूँ, सरवर सागर मान ॥

सर्ववाणी आका में, यज्ञों में जप यज्ञ । देव ऋषि नारद अहूँ पीपल वृक्ष सर्वज्ञ ॥ गजऐरावत उच्चश्रवा, सिद्धकपिल मुनिहोय । चित्ररथ हूँ गन्धर्व में राजा मनुष जोय । कामधेनु सुरभी अहूँ, शेष नाग हूँ नाग । बरुणनीर प्रहलाद असुर, अरयमपितृ लाग ॥ शेर मृग पंछी गरुड़, शस्त्रधारी राम । नदियों में गंगा अहूं माघ मास में नाम ॥ गायत्री छन्दोग में, तेज सर्व जग भूत । चन्द्र वंस वसुदेव हूँ, अर्जु न पांडव पूत ॥ सर्व मुनिन में व्यास हैं, शुक्र कवि मम जान । ज्ञानजीव हूं जगत का भजहिं मोहि बखान ॥ काल सर्वका जान मोहे अन्त न पारावार । सकल वस्तु में मैं रहूँ, मेरा ही विस्तार ॥ हो प्रसन्न श्री कृष्ण जी, दिव्यरूप प्रकटाय । चकित होय अर्जु न भयो, हाथजोड़ निरखाय ॥चौ०॥ देख्यो ताहि

सकल ब्रह्मण्डा । देख्यो लोक अलोक अखंडा ।। देख्यो ब्रह्मा केते रूप । देख्यो सुर नर देख्यो भूप ।। देख्यो शिव कैलाश विराजे । स्तुति करें डमरू बाजे ।। देख्यो इन्द्र लोक महान । देख्यो कोटि सहस्र भान ।। देख्यो रूप विराट विशाल । देख्यो कोटि शशिवर भाल ।। देख्यो देवी देव अनूपा । देख्यो सकल सृष्टि के रूपा ।। देख्यो केत आकाश पाताल । देख्यो केत खड़े जम काल ।। देख्यो जोगी ध्यान लगावें । देख्यो नारद बीन बजावें ।। देख्यो कुरुक्षेत्र का साजा । लाखों योद्धा घायल राजा ।। पारथ मन करो हैरानी । दोउ कर जोड़ के स्तुति ठानी ।। नमस्तं कृपालं नमस्तं दयालं । नमस्तं भूपालं नमस्तं ज्वालं ।। नमस्तं अनूपे नमस्तं चित्ररूपे । नमस्तं निरामी नमस्तं अकामीं ।। नमस्तं विराटे नमस्तं अघाटे । नमस्तं अभोले नमस्तं अडोले ।। नमस्तं निराकारं नमस्तं अकारं नमस्तं विशालं नमस्तं अकालं । नमस्तं विश्वमूर्ते नमस्तं एक सुरते । नमस्तं प्रहारी नमस्तं शस्त्रधारी ।। नमस्तं ज्ञान नमस्तं ध्यान । नमस्तं प्रातं नमस्तं अघातं ।। नमस्तं निराले नमस्तं सर्वपाले । नमस्तं अकाले नमस्तं भरनाशे ।। दोहा ।। जब स्तुति अर्जुन करी खुशी हुए भगवान् । प्रथम रूप प्रकट किये, दास आपना जान ।। यज्ञ होम तीर्थ किए, दर्शन पावे कोए । दिव्यरूप तुम देख्यो—ऋषिमुनि सब लोए ।। मुझको ही कर्ता समझ, मेरा ही सब रूप । मुझमें ही सब लीन हो, ज्यों सागर सरिता कूप ।। कर्म करो शुभ जगत में अर्पों मेरा नाम । अन्त समय मुक्ति मिले आवें मेरे धाम ।। सर्व धर्म को छोड़ तू

शरण हमारी आय । जो मेरी शरणी पड़े, ताके दुःख नशाय ॥ भरम तजो संशय सभी करो युद्ध को तान । योधा सब मेरे हते, लड़ो पार्थ लै बान ॥चौ०॥ हाथ जोड़ अर्जुन हर्षाई । गद-गद वचन कहो प्रभुताई ॥ अब मेरे संशय सब दूर । वज्र पड़े ज्यों गिरवर चूर ॥ आज्ञा पाल धनुष को धारूँ । शत्रु सम्मुख क्षण में मारूँ ॥ क्षमा करो अपराध हमारा । जो नहीं जान्यों रूप तुम्हारा ॥ अब मेरे मन निश्चय होई । नाथ सकल जग कर्ता तोही ॥

दोहा

वेद श्रुति का सार है, गीता अमृत रूप ।
पढ़े सुने नर ध्यावई, पड़े न यम के कूप ॥
निर्धन ही को धन मिले, पढ़े सुने जो कोय ।
पुत्रवान होय जगत में, निश्चय कीजै सोय ॥
रोगी रोग से रहित हो, नित उठ कीजै ध्यान ।
सब इच्छा पूर्ण करे, गीता निश्चय जान ॥
तीर्थव्रत और पुण्य ते, जो फल पावें लोक ।
पढ़े सुने गीता मिले, दुःख रोग जाय शोक ॥
अन्त समय मुक्ति मिले, पढ़े जो गीता नाथ ।
बलि रहे सब लोक में श्रीकृष्ण जी साथ ॥

॥ सम्पूर्ण भगवद्गीता समाप्त ॥

[४८] विनय छन्द लाल जी कृत

चौपाई

सुनहो प्रभु परमेश्वर स्वामी । सब घट के तुम अन्तरयामी ॥ देवी देव सकल तुम्हें ध्यावें । यत्न करें कुछ पार न पावें ॥ दृष्टि ते जग उपजाओ । प्रतिपालो संहार करायो ॥ तुम्हारी इच्छा ते सब कुछ होवे । आज्ञा बिन

तरु दल नहीं लोवे ॥ आश्चर्य गत तुम्हारा भगवाना । हारे विधि शिव आदि सुजाना ॥ पारब्रह्म पुरुषोत्तम ईशा । अपर अपार अच्युत जगदीशा । ज्योति रूप सब प्रकाशी । कारण करण सदा अविनाशी ॥ आनन्द विग्रह नित्य प्रवीना । निज इच्छा ते सब कुछ कीना ॥ आदि पुरुष विश्वम्भर देवा । नारायण नर व्यापक ऐवा ॥ श्रीकृष्ण स्वयंभू विष्णु कुसाई । भव तुम्हारे में तुम भव मांहीं ॥ सदा अलिप्त समान दयाला । करो सब की तुम प्रतिपाला ॥ श्री पति सब समर्थ अनन्ता । महाकाल ओं भगवन्ता ॥ कहा कहूं कछु कहि ना आवे । शेष सहस्र मुख पार न पावे ॥ पतित पावन है नाम तुम्हारो । शरणागत को बेग उबारो ॥ हों पतित अति महा विकारी । विषय रंग में अति रत धारी ॥ तप व्रत दान नहीं कुछ कीना । कर्म ज्ञान का मार्ग न चीन्हा ॥ भक्ति नहीं मुझ ते बन आवे । मन मेरो वैराग न पावे । अघ करते सब आयु बिहाई । शुभ कर्म में नहि प्रीत लगाई ॥ साधना साध नहीं कोई जानूं । वेदना की नहीं सार पछानूं ॥ निपट अनाथ महा मलीना । विषय रंग में अतिशय भीना ॥ निश्चय दीन गरीब तिहारो । बे खसमी को खसम हमारो ॥ जब कब उचरौ तेरे नाऊं । तुझ बिन और नहीं कोई ठाऊँ ॥ तुम माता तुम पिता हमारे । सुख दाता नित पालन हारे ॥चौरासी लख भरम पच हारो । तुझ बिन नाथ नहीं किसे निस्तारो ॥ जैसो कैसो । लौंडौ तेरो । तुझ बिन अवसर नहीं कोई मेरो ॥ देवि देव द्वार जहाँ जावों । तुझ बिन तौष नहीं कत पावों ॥ आदर अवर नहीं कोई देवे ।

सब कोई अपने दुख में पोवे ॥ जिस को अवर न कोई संभारे । तिन दीनन के तुम प्रतिपारे ॥ जो तुम्हारी शरणागत आये । महा पतित बैकुण्ठ पठाये ॥ अजामिल आदि किते निस्तारे । संज्ञा हो ते अपर अपारे ॥ हौ सुन वही भरोस जिय धार्‌यो । औरत होकर तुझे पुकार्‌यो ॥ विनय हमारी वेग सुनीजे । अनुचर को इज्जत रख लीजे ॥ पाप वासना मोरी विनाशो । अपने गुण मम हृदय प्रकाशो ॥ दरश आपनों मोहें दिखावो । करो कृपा औ सुख उपजावो । सेवा निज मुझ ते करवीजे । मानुष जन्म सफल कीजे ॥ तुम झूंठन का किणका पाऊँ । चरण वार नित शीश चढ़ाऊँ ॥ निज इच्छा जियु तियु प्रभु कीजे । कृपाधार के दास जीवीजे ॥ जू जहीं जहीं जतन करावो । निजते मुझको नहीं बिसरायो ॥

बिगड़ी मोरी नहीं विचारो । कर छाया मुझ शिर पर धारो ॥ मेरी लज्जा हाथ तुम्हारे । ज्यूं भावी त्यूं राख मुरारें ॥ मुझे अधीन नहीं अवर कीजे । धर्म मोर हृदय स्थित कीजे ॥ तुम्हारा यश मेरे हृदय भावे । आसरा तुम्हारा कभी न जावे ॥ तुझ बिन अवर नहीं कोई जानूँ । यह निश्चय हौं नित्य प्रति मानूँ ॥ मुठी शाक तोउ कर खाऊँ । करुणा बिन तृप्ति निश दिन चाहूँ । तुम करुणा बिन तृप्ति न पाऊँ ॥ उल्टो मेरी सीधी मानो । दासन दास आपनो जानो ॥ अशुभ वासना मेरी हरौ । कृपा समुद्र कृपा ही करौ ॥ तृष्णा मोरी आश निवारो । कुछ इक नहीं घट जाय तुम्हारो ॥ बुरे कर्म मोहें नहीं करवीजे । सदा वास सत्संगत दीजै ॥ दुष्टन को नहीं मुख दिखरावो । कलि विष मेरे सकल जरावो ॥

शान्ति देवो वर मेरे नित । किसी के साथ ना होवे अनहित ॥ मन मेरो उद्वेग ना पावैं । तव करुणा ते सब बन आवे ॥ नीके बचन सदा बुलावो । शुभ स्थाने वास दिखावो ॥ भव में मेरी प्रीति न होय । तुझ पद पंकज में मन पोवे ॥ जो धन शुभ होय सोई दिखावो । अशुभ अंश नहिं खिलवावो ॥ दोनों लोक मेरे प्रभु राखो । तुम सर्वज्ञ कहाँ हो भाखो ॥ अल्प बुद्धि हौं अति अज्ञानी । सेवा मत तन अब का मानी ॥ दीन दयाल दया मुझ कीजे । भुजा मेरी स्वामी पकड़ लीजे ॥ बिरद आपना नाथ संभारो । मेरी करणी नहीं विचारो ॥ यम के भव सब नरक निवारो । अपने ही चरणों तल धारो ॥ माया तुझ ते आज्ञा पावे । फिर तुझ ते मुझ को भरमावे ॥ कीट दीन की विनती ये ही । अंगीकार करो प्रभु तेही ॥ ज्यूं इच्छा त्यूं करो मुकंदे । लालदास चरणन रज बंदे ॥ विनय छंद को जो जन गावे । सायंकाल प्रातः उठ ध्यावे ॥ दीन होय कर चित कूँ देवे ॥ तिस को प्रभु अपना कर लेवे ॥ कलि कल अपने सकल मिटावे । लालदास सो हर पद पावे ॥

※ विनय छन्द समाप्त ※

भगवान भगत के बस में होते आये जब जब भीड़ पड़ी भक्तन पर गरुड़ छोड़ कर धाये ॥ भक्त ने ऐसा डाला फन्दा, आपा बने हर नाई नन्दो । प्रेम से चरण दबाए ॥ भगवान भ० ॥ केश पकड़ कर कंस पछाड़ा, साधू बनकर रावण मारा । राज विभीषन पाये ॥ भगवान भ० ॥ ध्रुव भगत पै जो कृपा कीनी, भगीरथ को गंगा दीनी । स्वर्ग दिये पहुँचाये ॥ भगवान भ० ॥ द्रौपदी जब दुष्टों ने घेरी, राखी लाज करी न देरी । सभा में चीर बढ़ाए ॥ भगवान भ० ॥ दुर्योधन के मेवा त्यागे, भूख लगी जब उठ के भागे । साग विदुर घर खाये ॥ भगवान् भ० ॥ खम्भ चीर प्रह्लाद उबारा, हिरणाकुश भी स्वर्ग सिधारा । नरसिंह रूप धराये ॥ भगवान भ० ॥

—०—

[५०] भजन

निर्बल के प्राण पुकार रहे, जगदीश हरे जगदीश हरे । स्वासों के स्वर झंकार रहे, जगदीश हरे जगदीश हरे ॥ आकाश हिमालय सागर में, पृथ्वी पाताल चराचर में । यह मधुर बोल गुंजार रहे, जगदीश हरे जगदीश हरे ॥ जब दया दृष्टि हो जाती है, सूखी खेती हरियाती है । इस आस पे जन उच्चार रहे, जगदीश हरे जगदीश हरे ॥ सुख दुःखों की चिन्ता है नहीं, भय है विश्वास न जाय कहीं । टूटे न लगा यह तार रहे, जगदीश हरे जगदीश हरे ॥ तुम हो करुणा के धाम सदा, सेवक है राधेश्याम सदा । बस इतना सदा विचार रहे, जगदीश हरे जगदीश हरे ॥

—०—

[५१] भजन

शरण में आये हैं हम तुम्हारी दया करो हे दयालु भगवन्। संभालो बिगड़ी दशा हमारी दया करो हे दयालु भगवन्। न हममें बल है न हममें बुद्धि न हम में साधन न हममें भक्ति। तुम्हारे दरपै हम हैं भिखारी दया करो हे दयालु भगवन्। जो तुम हो स्वामी तो हम हैं सेवक, जो तुम पिता हो तो हम हैं बालक। जो तुम हो ठाकुर तो हम पुजारी दया करो हे दयालु भगवन। सुना है हम अंश हैं तुम्हारे तुम्हीं हो सच्चे प्रभु हमारे। यह है तो सुधि तुमने क्यों बिसारी दया करो हे दयालु भगवन। बुरे हैं जो हम तो हैं तुम्हारे भले है जो हम तो हैं तुम्हारे। तुम्हारे दर के हैं हम भिखारी दया करो हे दयालु भगवन। प्रदान करदो महान शक्ति, भरो हमारे में ज्ञान भक्ति। तभी कहाओगे तापहारी दया करो हे दयालु भगवन। न होगी जब तक कृपा की वृष्टि। न होगी जब तक दया की दृष्टि। न तुम भी तब तक हो न्यायकारी दया करो हे दयालु भगवन। हमें तो अब टेक नाम की है पुकार यह 'राधेश्याम' की है। तुम्हारी तुम जानो निर्विकारी दया करो हे दयालु भगवन ॥

—०—

[५२] पुनः श्री गणपति जी की आरती

गणपति की सेवा मंगल मेवा से सब विघ्न टरें तीन लोग तेतीस देवता द्वार खड़े सब अरज करें ॥ ऋषि सिद्धि दक्षिण वाम विराजे अरु आनन्द सो चमर करें । धूप दीप और लिये आरती भक्त खड़े जयकार करें ॥ गण० १ ॥ गुड़ के मोदक भोग लगत हैं मूषक वाहन चढ़े फिरें । सौम्य रूप सेवा गणपति की विघ्न बाधायें दूर करें ॥गण०२॥ भादो मास और शुक्ल चतुर्थी दिन दोपारा पूर परें । लियो जन्म गणपति प्रभु जी ने दुर्गा मन आनन्द भरें ॥ गण० ३ ॥ श्री शंकर को आनन्द उपज्यो नाम सुने सब विघ्न टरें ॥ गण ४ ॥ आन विधाता आसन बैठे इन्द्र अप्सरा नृत्य करें । देखत वेद ब्रह्मा जी जाको विघन विनाशक नाम धरे । गण०५॥ एकदन्त गजवदन विनायक त्रिनयन रूप अनूप धरें । पग खम्भा सा उदर पुष्ट है देख चन्द्रमा हास्य करें ॥गण० ६ ॥ उठ प्रभात जो आरती गावें, जाके सिर छत्र यश फिरें ॥गण०७॥गण-पति की पूजा पहिले करनी काम सभी निर्विघ्न सरें । श्री प्रताप की श्री गणपति की हाथ जोड़ स्तुति करें ॥

—०—

[५३] अष्टादशश्लोकी गीता

अर्जुन उवाच

निमित्तानि च पश्यामि विपरीतानि केशव ।
न च श्रेयोनुऽपश्यामि हत्वा स्वजनमाहवे ।१।

भगवानुवाच

योगस्थः कुरु कर्माणि संगं त्यक्त्वा धनंजय ।
सिद्ध्यसिद्ध्योः समो भूत्वा समत्वं योगउच्यते २
कर्मेन्द्रियाणि संयम्य य आस्ते मनसा स्मरन् ।
इन्द्रियार्थान् विमूढात्मा मिथ्याचारः सउच्यते ३
श्रद्धावांल्लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः ।
ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति ।।४
यतेन्द्रियमनोबुद्धिर्मुनिर्मोक्षपरायणः ।
विगतेच्छाभयक्रोधो यः सदा मुक्त एव सः ।५।
युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु ।
युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा ।६।

दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया ।
मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते ।७।
अग्निर्ज्योतिरहः शुक्लः षण्मासा उत्तरायणम् ।
तत्र प्रयाता गच्छन्ति ब्रह्म ब्रह्मविदो जनाः ।८।
अपि चेत्सुदुराचारो भजते मामनन्यभाक् ।
साधुरेव स मन्तव्यः सम्यग्व्यवसितो हि सः ।९।
यो मामजमनादिञ्च वेत्ति लोकमहेश्वरम् ।
असंमूढः स मर्त्येषु सर्वपापैः प्रमुच्यते ।१०।
सत्कर्मकृन्मत्परमो सद्भक्तः संगवर्जितः ।
निर्वैरः सर्वभूतेषु यः स मामेति पांडव ।११।
श्रेयोहि ज्ञानमभ्यासाज्ज्ञानाद्ध्यानं विशिष्यते ।
ध्यानात्कर्मफलत्यागस्त्यागाच्छान्तिरनन्तरम् ।१२।
क्षेत्रज्ञं चापि मां विद्धि सर्वक्षेत्रेषु भारत ।
क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोर्ज्ञानं यत्तज्ज्ञानं मतं मम ।१३।

मां च योऽव्यभिचारेण भक्तियोगेन सेवते ।
स गुणान्समतीत्यैतान् ब्रह्मभूयाय कल्पते ।१४।
निर्मानमोहा जितसंगदोषा अध्यात्मनित्या
विनिवृत्तकामाः ।
द्वन्द्वैर्विमुक्ताः सुखदुःखसंज्ञैर्गच्छन्त्यमूढाः
पदमव्ययं तत् ।१५।
यः शास्त्रविधिमुत्सृज्य वर्तते कामकारतः ।
न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं न परां गतिम् ।१६।
मनः प्रसादः सौम्यत्वं मौनमात्मविनिग्रहः ।
भाव-संशुद्धिरित्येतत्तपो मानसमुच्यते ॥१७॥
सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज ।
अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः ।१८।
गीतासारमिदं पुण्यं यः पठेत्सुसमाहितः ।
विष्णुलोकमवाप्नोति भयशोकविनाशनम् ॥१९॥

—०—

॥ चुने हुये दोहे ॥

५४

नीच निचाई नहिं तजे, सज्जन हूँ के संग ।
तुलसी चन्दन बिटपबसि, विष नहिं तजत भुजंग ॥

५५

लूट सकै तो लूट लै, संत नाम की लूट ।
पाछे फिर पछताओगे, प्राण जाहिं जब छूट ॥

५६

पाँच पहर धन्दे गया, तीन पहर गया सोय ।
एक पहर हरिनाम बिन, मुक्ति कैसे होय ॥

५७

जहाँ दया तँह धर्म है जहाँ लोभ तहाँ पाप ।
जहाँ क्रोध तँह काल है जहाँ क्षमा तहाँ आप ॥

५८

माया मरी न मन मरा, मर मर गये शरीर ।
आशा तृष्णा ना मरी कह गये दास कबीर ॥

५९

सुमरन में मन लाइये, जैसे पानी मीन ।
प्राण तजे छिन बिछड़े, संत कबीर कह दीन ॥

६०

दया धर्म का मूल है, पाप मूल अभिमान ।
तुलसी दया न छोड़िये, जब लग घट में प्राण ॥

६१

पर धन पत्थर मानिये, पर स्त्री मात समान ।
इतने से हरि न मिले, तो तुलसीदास जमान ॥

६२

जहाँ क्रोध तहाँ काल है जहाँ लोभ तहाँ पाप ।
जहाँ दया तहाँ धर्म है जहाँ क्षमा तहाँ आप ॥

६३

तुलसी इस संसार में, मतलब का व्यापार ।
जबतक पैसा गांठ में, तब लगि लाखों यार ॥

६४

आव नहीं, आदर नहीं, नहां नयनन में नेह ।
तुलसी वहाँ न जाइये, कंचन बरसे मेह ॥

६५

सुत दारा अरु लक्ष्मी, पापी गृह भी होय ।
सन्त समागम हरि कथा, तुलसी दुर्लभ दोय ॥

६६

माया को माया मिले, करि करि लम्बे हाथ ।
तुलसी दास गरीब की, कोई न पूछे बात ॥

६७

तुलसी जगमें आयकर, कर लीजे दो काम ।
देने को टुकड़ा भला, लेने को हरि नाम ॥

६८

तुलसी आह गरीब की, कभी न खाली जाय।
मुये बकरे की खाल से, लोह भस्म हो जाय॥

६६

दौलत की दो लत है, तुलसी निश्चय कीन।
आवत अंधा करत है, जावत करत अधीन॥

७०

जिन खोजा तिन पाइया, पारब्रह्म घट माहिं।
यह जग बौरा हो रहा, जो इत उत ढूँढनजाहिं॥

७१

सकल वस्तु संग्रह करे, आवे कोई दिन काम।
वक्त पड़े पर ना मिले, माटी खरचे दाम॥

—०—

[७२] अरदास

नोट—यह अरदास श्रीमद्भागवत में से ली गई है। सर्वशक्तिमान् ईश्वर ने जो मुख्य दस अवतार धारण किये थे उनके नाम वर्णन किये गये है।

दो जलचर दो बनचर दो बिप्र दो शूर।
दो बनमाहिं करें तपस्या भक्त हृदय भरपूर॥

अरदास

प्रथम भगवान को सुमिरिये बाराह जी करें सहाय। यह पुरुष नर नारायण का ध्याइये जिस डिठियां सब दुख जाय। मच्छ कच्छ को सुमिरिये नरसिंह रूप बसाय। श्री बावन हरिका नाम ले घर आवे नोनिध धाय॥ श्री रामचन्द्र जी को सुमिरिये जो प्रकट करे सहाय। मुख पुनीत रसना पवित्र घट घट